



MP - SET



समाजशास्त्र

Madhya Pradesh State Eligibility Test

पेपर 2 || भाग - 3



Index

इकाई - V : राज्य, राजनीति और विकास

1.	भारत में राजनीतिक प्रक्रियाएं <ul style="list-style-type: none"> ➢ जनजाति, राष्ट्र राज्य और सरहद ➢ अधिकारीतंत्र ➢ अभिशासन और विकास ➢ लोक नीति: स्वास्थ्य, शिक्षा और आजीविकाएं ➢ राजनीतिक संस्कृति ➢ तृण-मूल प्रजातंत्र ➢ विधि और समाज ➢ लिंग और विकास ➢ भ्रष्टाचार ➢ अंतर्राष्ट्रीय विकास संगठनों की भूमिका 	1
2.	सामाजिक आंदोलन और विरोध <ul style="list-style-type: none"> ➢ राजनीतिक गुट, दबाव गुट ➢ जाति, नृजातीयता, विचारधारा, लिंग, दिव्यांगता, धर्म और क्षेत्र-आधारित आंदोलन ➢ सिविल सोसाइटी और नागरिकता ➢ गैर-सरकारी संगठन, सक्रियतावाद और नेतृत्व ➢ आरक्षण और राजनीति 	39

इकाई - VI : अर्थव्यवस्था और समाज

3.	<ul style="list-style-type: none"> ➢ विनिमय, उपहार, पूँजी, श्रम और बाजार ➢ उत्पादन की विधियों पर बहस ➢ सम्पत्ति और सम्पत्ति सम्बन्ध ➢ राज्य और बाजार: कल्याणवाद और नव-उदारतावाद ➢ आर्थिक विकास के मॉडल ➢ गरीबी और अपवर्जन ➢ कारखाना और उद्योग प्रणालियां ➢ श्रम सम्बन्धों की बदलती प्रकृति ➢ लिंग और श्रम प्रक्रिया ➢ कारोबार और परिवार ➢ डिजिटल अर्थव्यवस्था और ई-वाणिज्य ➢ वैश्विक कारोबार और कार्पोरेट्स ➢ पर्यटन ➢ उपभोग 	73
----	--	----

इकाई - VII : पर्यावरण और समाज

4.	<ul style="list-style-type: none"> ➢ सामाजिक और सांस्कृतिक पारिस्थितिकी विविध रूप - ➢ प्रौद्योगिकीय परिवर्तन, कृषि और जैव विविधता ➢ देशीय ज्ञान प्रणालियां और देशी औषधि ➢ लिंग और पर्यावरण ➢ वन नीतियां, आदिवासी और अपवर्जन ➢ पारिस्थितिकीय हास और प्रवास ➢ विकास, विस्थापन और पुनर्वास ➢ जल और सामाजिक अपवर्जन ➢ आपादा और सामुदायिक प्रतिक्रियाएं ➢ पर्यावरण प्रदूषण, जन स्वास्थ्य और दिव्यांगता ➢ जलवायु परिवर्तन और अंतर्राष्ट्रीय नीतियां ➢ पर्यावरण संबंधी आन्दोलन 	163
----	---	-----

राज्य, राजनीति और विकास

1: परिचय, जनजाति, राष्ट्र राज्य और सीमा, नौकरशाही

परिचय

समाजशास्त्र पाठ्यक्रम का "राज्य, राजनीति और विकास" भारत के विकास पथ को आकार देने में राज्य संस्थाओं, राजनीतिक प्रक्रियाओं और सामाजिक आंदोलनों की परस्पर क्रिया का परीक्षण करता है। भारत में राजनीतिक प्रक्रियाओं में जनजाति-राष्ट्र-राज्य-सीमा गतिशीलता, नौकरशाही, शासन, लोक नीति, राजनीतिक संस्कृति, जमीनी लोकतंत्र, कानून, लिंग, भ्रष्टाचार और अंतर्राष्ट्रीय संगठन शामिल हैं, जो भारत की जटिल राजनीति को दर्शाते हैं। सामाजिक आंदोलनों और विरोधों में राजनीतिक गुट, दबाव समूह, जाति-जातीयता-विचारधारा-लिंग-विकलांगता-धर्म-क्षेत्र-आधारित आंदोलन, नागरिक समाज, गैर सरकारी संगठन, सक्रियता और आरक्षण शामिल हैं, जो सामूहिक कार्रवाई पर प्रकाश डालते हैं।

1. राज्य, राजनीति और विकास

1.1 संदर्भ और महत्व

- राजनीतिक प्रक्रियाएँ** : राज्य संस्थाएँ (जैसे, नौकरशाही), नीतियाँ (जैसे, स्वास्थ्य, शिक्षा), और सामाजिक-राजनीतिक गतिशीलता (जैसे, जनजाति, भ्रष्टाचार)।
- सामाजिक आंदोलन** : सामूहिक कार्यवाहियाँ (जैसे, जाति, लिंग) असमानताओं को चुनौती देती हैं और नीति निर्माण करती हैं। ये विषय भारत की राजनीति को समझने के लिए महत्वपूर्ण हैं, जहाँ 1.4 अरब नागरिक हैं, जिनमें से 90 करोड़ ग्रामीण (65%) और 48 करोड़ शहरी (35%, 2025) जाति (20% दलित, भाग 4.1), जनजाति (8.6%, 10.4 करोड़) और राजनीतिक विविधता (90 करोड़ मतदाता) द्वारा आकार लेते हैं। ये निम्नलिखित पर प्रकाश डालते हैं:
- राज्य-समाज संबंध** : नौकरशाही (1 मिलियन आईएएस अधिकारी), शासन (जैसे, आधार), और नीतियाँ (जैसे, एनईपी 2020) विकास को गति देती हैं।
- सामाजिक परिवर्तन** : आंदोलन (जैसे, 2020 कृषि विरोध, भाग 4.3) और सक्रियता (जैसे, #MeToo) असमानताओं को नया रूप देते हैं।
- भारतीय विविधता** : जनजाति-राष्ट्र राज्य तनाव (जैसे, पूर्वोत्तर), जातिगत राजनीति (जैसे, मंडल), और लिंग अंतर (25% महिला कार्यबल, भाग 4.9)।

1.2 प्रासंगिकता

- संकल्पनात्मक स्पष्टता** : परिभाषाएँ (जैसे, नौकरशाही, नागरिक समाज)।
- भारतीय अनुप्रयोग** : जनजातीय संघर्ष, एनईपी 2020, दलित आंदोलन।
- सैद्धांतिक विश्लेषण** : विचारक (जैसे, वेबर, सेन, टिली)। हाल के रुझान (2020-2025) डिजिटल शासन (जैसे, ई-नाम), जाति-आधारित आरक्षण और डिजिटल सक्रियता (#किसानों का विरोध) पर ज़ोर देते हैं, जो पेपर 1 की शोध योग्यता के अनुरूप हैं। विषयों के अंतःविषय संबंध (जैसे, राजनीति विज्ञान, नृविज्ञान) उनकी परीक्षा प्रासंगिकता को बढ़ाते हैं, जिससे वे भारत के राज्य और समाज के विश्लेषण के लिए आवश्यक हो जाते हैं।

2. राज्य, राजनीति और विकास का परिचय

2.1 परिभाषा और महत्व

राज्य, राजनीति और विकास, राज्य संस्थाओं, राजनीतिक प्रक्रियाओं और विकासात्मक नीतियों के परस्पर प्रभाव को संदर्भित करता है जो सामाजिक प्रगति को आकार देते हैं, साथ ही परिवर्तन लाने वाले सामाजिक आंदोलनों को भी। समाजशास्त्र में, यह शक्ति, शासन और प्रतिरोध का विश्लेषण करता है।

- मुख्य विचार** : राज्य और आंदोलन भारत के विकास पथ को आकार देते हैं।
- प्रमुख विचारक** :
 - मैक्स वेबर** : राज्य वैध प्राधिकारी है, नौकरशाही तर्कसंगत है।
 - अमर्त्य सेन** : क्षमता विस्तार के रूप में विकास (जैसे, स्वास्थ्य, शिक्षा)।
 - चार्ल्स टिली** : सामूहिक कार्रवाई, राज्य प्रतिरोध के रूप में सामाजिक आंदोलन।
- उद्देश्य** :
 - राज्य की शक्ति (जैसे, नौकरशाही, 1 मिलियन अधिकारी) की व्याख्या करता है।
 - विकास का विश्लेषण करता है (उदाहरणार्थ, 74% साक्षरता, भाग 4.1)।
 - प्रतिरोध को प्रासंगिक बनाता है (उदाहरण के लिए, 2020 कृषि विरोध प्रदर्शन, भाग 4.3)।

विस्तृत व्याख्या :

वेबर का राज्य सिद्धांत इसे वैध प्राधिकार रखने के रूप में परिभाषित करता है, जिसमें भारत का लोकतांत्रिक राज्य (900 मिलियन मतदाता) कानूनों (जैसे, एससी/एसटी अधिनियम, भाग 4.3) और नीतियों (जैसे, आयुष्मान भारत) को लागू करता है। सेन का क्षमता दृष्टिकोण विकास को स्वतंत्रता बढ़ाने के रूप में देखता है, जिसमें भारत की साक्षरता (74%, 2025) और स्वास्थ्य (70 वर्ष की जीवन प्रत्याशा, भाग 4.2) प्रगति को दर्शाती है, हालांकि जाति (70% दलित कम वेतन वाले, भाग 4.1) और लिंग अंतर (25% महिला कार्यबल, भाग 4.9) बने हुए हैं। टिली की सामूहिक कार्रवाई 2020 के कृषि विरोध (1 मिलियन किसान, भाग 4.3) जैसे आंदोलनों को राज्य की नीतियों का विरोध करने के रूप में दर्शाती है। भारत का राज्य 1.4 बिलियन नागरिकों का प्रबंधन करता है डिजिटल प्लेटफॉर्म (ट्रिटर/एक्स, 100 मिलियन #किसान विरोध ट्रीट, भाग 4.3) आवाज को बढ़ाते हैं, लेकिन डिजिटल विभाजन (20% ग्रामीण इंटरनेट, भाग 4.4) और भ्रष्टाचार (10,000 मामले/वर्ष) प्रगति को चुनौती देते हैं, जिससे यह ढांचा भारत की राजनीति को समझने के लिए महत्वपूर्ण हो जाता है।

2.2 राज्य, राजनीति और विकास की विशेषताएँ

1. **राज्य प्राधिकरण :** वैध शक्ति (जैसे, संविधान)।
2. **राजनीतिक प्रक्रियाएँ :** चुनाव, नीतियाँ (जैसे, 900 मिलियन मतदाता)।
3. **विकास लक्ष्य :** क्षमता विस्तार (उदाहरणार्थ, 74% साक्षरता)।
4. **सामाजिक प्रतिरोध :** आंदोलन, विरोध प्रदर्शन (जैसे, 2020 कृषि विरोध प्रदर्शन)।
5. **असमानता :** जाति, लिंग अंतर (जैसे, 70% दलित कम वेतन पर हैं)।

स्मृति सहायक : एसपीडीएसआई (राज्य, राजनीतिक, विकास, सामाजिक, असमानता)।

विस्तृत विवरण :

- **राज्य प्राधिकरण :** भारत का संविधान वैध शक्ति प्रदान करता है, जिसका क्रियान्वयन 10 लाख आईएएस अधिकारियों द्वारा किया जाता है (भाग 1)।
- **राजनीतिक प्रक्रियाएँ :** 900 मिलियन मतदाता, 543 लोकसभा सीटें, एनईपी 2020 जैसी नीतियाँ राजनीति को आकार देती हैं।
- **विकास लक्ष्य :** साक्षरता (74%), स्वास्थ्य (70 वर्ष जीवन प्रत्याशा), लेकिन 30% गरीबी रेखा से नीचे।
- **सामाजिक प्रतिरोध :** 1 मिलियन कृषि विरोध (2020), #MeToo (10 मिलियन ट्रीट) राज्य की नीतियों को चुनौती देते हैं।
- **असमानता :** 70% दलित कम वेतन वाली नौकरियों में कार्यरत हैं, 25% महिला कार्यबल, जाति-लिंग बहिष्कार जारी है।

2.3 भारतीय संदर्भ

- **जनसांख्यिकी :** 1.4 बिलियन, 65% ग्रामीण, 35% शहरी, 8.6% जनजातियाँ (104 मिलियन)।
- **राजनीति :** लोकतांत्रिक चुनाव (70% मतदान, 2024), जातिगत वोट बैंक (20% दलित सांसद, भाग 4.1)।
- **विकास :** 7% जीडीपी वृद्धि, 74% साक्षरता, लेकिन 30% गरीबी, डिजिटल विभाजन (20% ग्रामीण)।
- **आंदोलन :** 2020 के कृषि विरोध प्रदर्शन, दलित आंदोलन, #MeToo सक्रियता (भाग 4.3, 4.9)।
- **चुनौतियाँ :** भ्रष्टाचार (60% सार्वजनिक धारणा, 2020), जातिगत हिंसा (1,000 मामले/वर्ष, भाग 4.3), लिंग अंतर (25% कार्यबल)।

विस्तृत उदाहरण :

भारत में, राज्य, राजनीति और विकास आपस में गुंथे हुए हैं। लोकतांत्रिक राज्य (900 मिलियन मतदाता) मनरेगा (50 मिलियन व्यक्ति-दिन, भाग 2022) जैसी नीतियों को लागू करता है, जो सेन के क्षमता दृष्टिकोण के अनुसार, आजीविका को बढ़ाता है। राजनीतिक प्रक्रियाओं में जाति-आधारित वोट बैंक (30% ओबीसी मतदाता, भाग 1) शामिल होते हैं, जिसमें बीएसपी जैसी पार्टियां दलित समर्थन (20% सांसद) का लाभ उठाती हैं। विकास उपलब्धियों में 74% साक्षरता (एनईपी 2020) और 7% जीडीपी वृद्धि शामिल है, लेकिन कम वेतन वाली नौकरियों में 70% दलित (भाग 1) और 25% महिला कार्यबल (भाग 3) असमानताओं को उजागर करते हैं। सामाजिक आंदोलन, जैसे 2020 के कृषि विरोध प्रदर्शन (10 लाख किसान, भाग 3), कॉर्पोरेट नीतियों का विरोध करते हैं (10% अनुबंध खेती, भाग 2), नौकरशाही (10 लाख आईएएस अधिकारी) और ई-गवर्नेंस (आधार, 1.3 अरब उपयोगकर्ता) वितरण को सुव्यवस्थित करते हैं, लेकिन भ्रष्टाचार (10,000 मामले/वर्ष) और डिजिटल विभाजन (20% ग्रामीण इंटरनेट, भाग 4) प्रगति को चुनौती देते हैं, साथ ही जनजातीय सीमा विवाद (जैसे, नागा संघर्ष, 100,000 विस्थापित) जटिलता को बढ़ाते हैं, जो इकाई 5 की प्रासंगिकता को रेखांकित करता है।

3. जनजाति, राष्ट्र राज्य और सीमा

3.1 परिभाषा और महत्व

जनजाति से तात्पर्य विशिष्ट सांस्कृतिक, सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था वाले मूलनिवासी समुदायों से है, जो अक्सर राष्ट्र-राज्यों के अंतर्गत हाशिए पर रहते हैं (जैसे, अनुसूचित जनजातियाँ, 8.6% जनसंख्या)। **राष्ट्र-राज्य** एक संप्रभु इकाई है जिसकी सीमाएँ निर्धारित होती हैं और जो विविध समूहों को एक समान पहचान के अंतर्गत एकजुट करती है (जैसे, भारत का संविधान)। **सीमाएँ** भू-राजनीतिक सीमाओं को दर्शाती हैं, जिन पर अक्सर विवाद होता है और जो जनजातीय और राज्य के संबंधों को आकार देती हैं (जैसे, पूर्वोत्तर सीमाएँ)। समाजशास्त्र में, ये अवधारणाएँ पहचान, हाशिए पर रहने और राज्य शक्ति का विश्लेषण करती हैं।

- **मुख्य विचार :** जनजातियों को राष्ट्र राज्यों के भीतर हाशिए पर रखा जाता है, तथा सीमाएँ संघर्ष क्षेत्र बन जाती हैं।

• प्रमुख विचारक :

- **जी.एस.घुर्ये** : जनजातियों को "पिछड़े हिन्दू" माना जाता है, जिन्हें आत्मसात करने की आवश्यकता है।
- **वेरियर एल्विन** : जनजातीय स्वायत्तता, सांस्कृतिक संरक्षण (जैसे, गोंड अनुष्ठान)।
- **फ्रेडरिक बार्थ** : जातीय सीमाएं जनजाति-राज्य संबंधों को परिभाषित करती हैं (उदाहरण के लिए, नागा पहचान)।
- **उद्देश्य** :
- जनजातीय पहचान (जैसे, संथाल संस्कृति) की व्याख्या करता है।
- राज्य-जनजाति तनावों (जैसे, पूर्वोत्तर संघर्ष) का विश्लेषण करता है।
- सीमा विवादों (जैसे, AFSPA) को प्रासंगिक बनाता है।

विस्तृत व्याख्या :

घुर्ये का आत्मसातीकरणवादी वृष्टिकोण जनजातियों (104 मिलियन एसटी) को हिंदू समाज के हिस्से के रूप में देखता है, आरक्षण (7.5%, भाग 2) जैसी नीतियों के साथ उन्हें एकीकृत करता है, लेकिन हाशिये पर बने रहते हैं (गरीबी के नीचे 50% एसटी, भाग 1)। एल्विन का स्वायत्तता परिप्रेक्ष्य आदिवासी संस्कृति पर जोर देता है, जिसमें संथाल त्योहार (90% भागीदारी, भाग 1) संरक्षित हैं, लेकिन भूमि विस्थापन (50% एसटी, भाग 2) पहचान को खतरा है। बार्थ की जातीय सीमाएं जनजाति-राज्य संघर्षों को दर्शाती हैं, जिसमें नागा जनजातियां (2 मिलियन) एफएसपीए (1958) के तहत पूर्वोत्तर सीमाओं में स्वायत्तता का दावा करती हैं। भारत का राष्ट्र राज्य 22 भाषाओं के माध्यम से 1.4 बिलियन को एकीकृत करता है भारत-म्यांमार (1,600 किमी) जैसी सीमाएं विवादित हैं, और मणिपुर में हुई झड़पों (2023) में 1,00,000 लोग विस्थापित हुए हैं। डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म (#TribalRights, 10 लाख ट्रीट) मँगों को बढ़ा रहे हैं, लेकिन डिजिटल विभाजन (20% ग्रामीण इंटरनेट, भाग 4) और हिंसा (100 आदिवासी झड़पें/वर्ष, भाग 3) अभी भी जारी हैं, जिससे ये अवधारणाएँ UGC NET JRF के लिए महत्वपूर्ण हो गई हैं।

3.2 जनजाति, राष्ट्र राज्य, सीमा की विशेषताएँ

1. **जनजातीय पहचान** : सांस्कृतिक विशिष्टता (जैसे, संथाल अनुष्ठान)।
2. **राज्य संप्रभुता** : वैध प्राधिकार (जैसे, संविधान)।
3. **सीमा विवाद** : भू-राजनीतिक विवाद (जैसे, पूर्वोत्तर)।
4. **हाशिये पर डालना** : जनजातीय बहिष्कार (जैसे, 50% गरीबी)।
5. **गतिशील अंतःक्रिया** : राज्य-जनजाति तनाव (जैसे, AFSPA)।

स्मृति सहायक : टीएसबीएमडी (आदिवासी, राज्य, सीमा, हाशिये पर, गतिशील)।

विस्तृत विवरण :

- **जनजातीय पहचान** : संथाल जनजातियाँ (झारखंड में 5%) हिंदू मानदंडों से अलग टोटेम पूजा (90%) करती हैं (भाग 1)।
- **राज्य संप्रभुता** : भारत का संविधान 1.4 अरब लोगों को एकीकृत करता है, जिसे 543 सांसदों, 1 मिलियन आईएएस अधिकारियों द्वारा लागू किया जाता है।
- **सीमा विवाद** : भारत-म्यांमार सीमा विवाद के कारण मणिपुर में 100,000 लोग विस्थापित (2023, भाग 3)।
- **हाशिये पर** : 50% अनुसूचित जनजातियाँ गरीबी रेखा से नीचे, 60% भूमिहीन, 40% साक्षरता (भाग 1, 2)।
- **गतिशील अंतर्क्रिया** : AFSPA के तहत नागा स्वायत्तता की मांग से प्रति वर्ष 100 झड़पें होती हैं (भाग 3)।

3.3 जनजाति के प्रकार, राष्ट्र राज्य, सीमा गतिशीलता

1. **पृथक जनजातियाँ** : दूरस्थ, स्वायत्त (जैसे, सेटिनलीज़)।
2. **एकीकृत जनजातियाँ** : आत्मसात, शहरीकृत (जैसे, भील)।
3. **विवादित सीमाएँ** : संघर्ष क्षेत्र (जैसे, पूर्वोत्तर)।
4. **स्थिर सीमाएँ** : शांतिपूर्ण सीमाएँ (जैसे, भारत-नेपाल)।
5. **जनजातीय स्वायत्तता आंदोलन** : प्रतिरोध (जैसे, नागा मांगें)।

स्मृति सहायक : IICST (पृथक, एकीकृत, विवादित, स्थिर, जनजातीय)।

विस्तृत विवरण :

- **पृथक जनजातियाँ** : सेटिनलीज़ (100, अंडमान) संपर्क का विरोध करते हैं, 100% स्वायत्त (भाग 1)।
- **एकीकृत जनजातियाँ** : भील (10% राजस्थान) शहरीकृत, 20% शहरों में, 7.5% आरक्षण (भाग 2)।
- **विवादित सीमाएँ** : पूर्वोत्तर की भारत-म्यांमार सीमा पर 100,000 लोग विस्थापित हुए (2023, भाग 3)।
- **स्थिर सीमाएँ** : भारत-नेपाल सीमा (1,700 किमी) व्यापार को सुगम बनाती है, 90% शांतिपूर्ण है।
- **जनजातीय स्वायत्तता आंदोलन** : नागा जनजातियाँ (2 मिलियन) स्वायत्तता की मांग करती हैं, प्रति वर्ष 100 झड़पें (भाग 3)।

3.4 भारतीय संदर्भ में जनजाति, राष्ट्र राज्य, सीमा

- **जनजातीय जनसंख्या** : 8.6% (104 मिलियन), 40% साक्षरता, 50% गरीबी।
- **उदाहरण** : नागा जनजातियाँ (2 मिलियन), पूर्वोत्तर सीमा संघर्ष।

- **राष्ट्र राज्य** : 1.4 अरब, 22 भाषाएँ, 900 मिलियन मतदाता।
- **सीमाएँ** : 15,000 किमी, पूर्वोत्तर विवादित (100,000 विस्थापित)।
- **नीतियाँ** : वन अधिकार अधिनियम (2006, 20% दावे), अफस्पा (1958)।
- **चुनौतियाँ** : जनजातीय विस्थापन (50% भूमिहीन), हिंसा (100 झड़पें/वर्ष), डिजिटल विभाजन (20% ग्रामीण)।

विस्तृत भारतीय उदाहरण :

पूर्वोत्तर भारत में, जनजाति-राष्ट्र-राज्य-सीमा की गतिशीलता जटिल है। नागा जनजातियाँ (20 लाख, 1% जनसंख्या) एल्विन की स्वायत्ता के अनुसार सांस्कृतिक पहचान (90% जनजातीय त्यौहार, भाग 1) बनाए रखती हैं, लेकिन बार्थ की सीमाओं के अनुसार भारत के राष्ट्र-राज्य (90 करोड़ मतदाता) के विरुद्ध संप्रभुता की माँग करती हैं। घुर्ये की आत्मसात आलोचना के अनुसार, विवादित भारत-म्यांमार सीमा (1,600 किमी) के कारण मणिपुर में संघर्ष में 1,00,000 लोग विस्थापित हुए (2023), और AFSPA (1958) अशांति को बढ़ावा दे रहा है (100 संघर्ष/वर्ष, भाग 3)। राज्य की संप्रभुता 1.4 अरब लोगों को एकीकृत करती है, लेकिन 50% नागा भूमि अलग-थलग पड़ गई है (भाग 2), और 40% साक्षरता दर पिछड़ गई है (भाग 1)। वन अधिकार अधिनियम (20% दावे स्वीकृत, भाग 2) का उद्देश्य भूमि को बहाल करना है, लेकिन 50% अनुसूचित जनजातियाँ गरीबी रेखा से नीचे हैं। डिजिटल सक्रियता (#TribalRights, 10 लाख ट्रीट) स्वायत्ता की माँग करती है, लेकिन 20% ग्रामीण इंटरनेट पहुँच (भाग 4) इसकी पहुँच को सीमित कर देती है। हिंसा (प्रति वर्ष 100 आदिवासियों की मृत्यु, भाग 3) और जाति-जनजाति तनाव (20% दलित-अनुसूचित जनजाति संघर्ष, भाग 3) जारी हैं, जबकि ई-गवर्नेंस (आधार, 90% कवरेज) इन समस्याओं को हल करने में मदद तो करता है, लेकिन विवादों का समाधान नहीं कर पाता, जो भारत की राजनीति में इन गतिशीलता की भूमिका को उजागर करता है।

3.5 सैद्धांतिक दृष्टिकोण

- **आत्मसातीकरणवाद (घुरिये)** : जनजातियाँ राष्ट्र राज्य में एकीकृत हो जाती हैं (उदाहरण, भील)।
- **स्वायत्ता (एल्विन)** : जनजातीय सांस्कृतिक संरक्षण (जैसे, संथाल)।
- **जातीय सीमाएँ (बार्थ)** : जनजाति-राज्य तनाव (जैसे, नागा)।
- **संघर्ष सिद्धांत (मार्क्स)** : राज्य जनजातियों का शोषण करता है (जैसे, भूमि हानि)।
- **भारतीय उदाहरण** : एल्विन की स्वायत्ता बनाम बार्थ की सीमाएँ।

विस्तृत विश्लेषण :

- **आत्मसातीकरणवाद** : घुर्ये भीलों (20% शहरीकृत) को आरक्षण के माध्यम से एकीकृत होते हुए देखते हैं (7.5%, भाग 2)।
- **स्वायत्ता** : एल्विन संथाल त्योहारों (90%) को सांस्कृतिक संरक्षण के रूप में देखते हैं, जो आत्मसातीकरण का विरोध करते हैं (भाग 1)।
- **जातीय सीमाएँ** : बार्थ नागा स्वायत्ता की माँग (प्रति वर्ष 100 झड़पें) को सीमा-निर्धारण के रूप में देखते हैं (भाग 3)।
- **संघर्ष सिद्धांत** : मार्क्स 50% आदिवासी भूमि हानि (भाग 2) को राज्य-पूंजीवादी शोषण के रूप में देखते हैं।

3.6 ताकत और सीमाएँ

- **ताकत :**
 - जनजातीय पहचान को संरक्षित करता है (90% त्यौहार)।
 - राष्ट्र राज्य को एकीकृत करता है (900 मिलियन मतदाता)।
- **सीमाएँ :**
 - जनजातियों को हाशिये पर डाल देता है (50% गरीबी)।
 - सीमा संघर्ष को बढ़ावा (100,000 विस्थापित)।

आलोचनाएँ :

- घुर्ये का समावेशन जनजातीय स्वायत्ता की अनदेखी करता है (भाग 1)।
- मार्क्स का संघर्ष सांस्कृतिक सीमाओं को नजरअंदाज करता है (भाग 3)।
- डिजिटल विभाजन (20% ग्रामीण) जनजातीय विश्लेषण को चुनौती देता है (भाग 4)।

दृश्य सहायता : जनजाति, राष्ट्र राज्य, सीमा गतिशीलता प्रकारों की तालिका

प्रकार	विवरण	भारतीय उदाहरण
पृथक जनजातियाँ	दूरस्थ, स्वायत्त	सेंटिनली, 100% स्वायत्त
एकीकृत जनजातियाँ	आत्मसात, शहरीकृत	भील, 20% शहरीकृत
विवादित सीमाएँ	संघर्ष क्षेत्र	मणिपुर, 100,000 विस्थापित
स्थिर सीमाएँ	शांतिपूर्ण सीमाएँ	भारत-नेपाल, 90% व्यापार
जनजातीय स्वायत्ता	प्रतिरोध आंदोलन	नागा माँग, प्रति वर्ष 100 झड़पें

4. नौकरशाही

4.1 परिभाषा और महत्व

- नौकरशाही एक पदानुक्रमित प्रशासनिक व्यवस्था है जिसमें औपचारिक नियम, भूमिकाएँ और प्रक्रियाएँ होती हैं जो राज्य के कार्यों का कुशलतापूर्वक प्रबंधन करती हैं। समाजशास्त्र में, यह राज्य की शक्ति, शासन और दक्षता का विश्लेषण करती है।
- **मुख्य विचार :** नौकरशाही तर्कसंगत राज्य प्रशासन सुनिश्चित करती है लेकिन अक्षमताओं का सामना करती है।
 - **प्रमुख विचारक :**
 - **मैक्स वेबर :** नौकरशाही तर्कसंगत, पदानुक्रमित, नियम-आधारित।
 - **रॉबर्ट मर्टन :** नौकरशाही की शिथिलता, लालफीताशाही।
 - **निकोस पौलांज्जास :** नौकरशाही राज्य तंत्र, वर्ग हितों के रूप में।
 - **उद्देश्य :**
 - राज्य प्रशासन (जैसे, 1 मिलियन आईएएस अधिकारी) की व्याख्या करता है।
 - दक्षता का विश्लेषण करता है (जैसे, ई-गवर्नेंस)।
 - चुनौतियों (जैसे, भ्रष्टाचार) को संदर्भित बनाता है।

विस्तृत व्याख्या :

वेबर का नौकरशाही सिद्धांत तर्कसंगतता पर ज़ोर देता है, जिसके अनुसार भारत के 10 लाख आईएएस अधिकारी पदानुक्रम (जैसे, डीएम से सचिव तक) के माध्यम से नीतियों (जैसे, मनरेगा, भाग 2) को लागू करते हैं। मर्टन की शिथिलताएँ लालफीताशाही को उजागर करती हैं, जिसमें 60% सार्वजनिक रिपोर्टिंग में देरी होती है (2020 सर्वेक्षण)। पौलांज्जास का मार्क्सवादी दृष्टिकोण नौकरशाही को अभिजात वर्ग के हितों की सेवा करते हुए देखता है, जिसमें 10% उच्च-जाति के आईएएस अधिकारी (भाग 1) हावी हैं। भारत की नौकरशाही 1.4 अरब नागरिकों का प्रबंधन करती है, सेवाएँ (आधार, 1.3 अरब उपयोगकर्ता) और नीतियाँ प्रदान करती है (एनईपी 2020, भाग 3)। ग्रामीण-शहरी असमानताएँ (20% ग्रामीण इंटरनेट, भाग 4) और जाति प्रतिनिधित्व (10% एससी/एसटी आईएएस, भाग 2) वितरण को आकार देते हैं। डिजिटल ई-गवर्नेंस (ई-एनएएम, 20% किसान, भाग 2) दक्षता बढ़ाता है, लेकिन भ्रष्टाचार (10,000 मामले/वर्ष) और देरी (50% मनरेगा भुगतान देरी से) जारी है, डिजिटल सक्रियता (#भ्रष्टाचार-विरोधी, 500,000 ट्रीट) मुद्दों को उजागर कर रही है, जिससे यूजीसी नेट जेआरएफ के लिए नौकरशाही महत्वपूर्ण हो गई है।

4.2 नौकरशाही की विशेषताएँ

1. **पदानुक्रम :** संरचित रैंक (जैसे, आईएएस स्तर)।
2. **नियम-आधारित :** औपचारिक प्रक्रियाएँ (जैसे, यूपीएससी नियम)।
3. **अवैयक्तिकता :** वस्तुनिष्ठ निर्णय (जैसे, नीति प्रवर्तन)।
4. **विशेषज्ञता :** प्रशिक्षित भूमिकाएँ (जैसे, डीएम विशेषज्ञता)।
5. **अकुशलताएँ :** लालफीताशाही, भ्रष्टाचार (जैसे, 60% देरी)।

स्मृति सहायक : एचआरआईएसआई (पदानुक्रम, नियम-आधारित, अवैयक्तिकता, विशेषज्ञता, अक्षमताएँ)।

विस्तृत विवरण :

- **पदानुक्रम :** डीएम से कैबिनेट सचिव तक आईएएस रैंक, 1 मिलियन अधिकारी 1.4 बिलियन का प्रबंधन करते हैं।
- **नियम-आधारित :** यूपीएससी परीक्षा, सेवा नियम 100% योग्यता-आधारित प्रवेश सुनिश्चित करते हैं (भाग 2)।
- **निष्पक्षता :** पॉलिसी वितरण (जैसे, आधार) का लक्ष्य वस्तुनिष्ठता, 90% कवरेज है।
- **विशेषज्ञता :** राजस्व, स्वास्थ्य में प्रशिक्षित डीएम, जिनमें से 50% के पास पीजी डिग्री है।
- **अक्षमताएँ :** 60% सार्वजनिक रिपोर्ट में देरी, 10,000 भ्रष्टाचार के मामले/वर्ष (2020)।

4.3 नौकरशाही के प्रकार

1. **सिविल सेवा नौकरशाही :** प्रशासनिक (जैसे, आईएएस, आईपीएस)।
2. **सार्वजनिक क्षेत्र की नौकरशाही :** सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम (जैसे, ओएनजीसी)।
3. **न्यायिक नौकरशाही :** न्यायालय, कानूनी (जैसे, जिला न्यायाधीश)।
4. **स्थानीय नौकरशाही :** नगरपालिका, पीआरआई (जैसे, बीडीओ)।
5. **डिजिटल नौकरशाही :** ई-गवर्नेंस (जैसे, आधार)।

स्मृति सहायक : सीपीजेएलडी (सिविल, सार्वजनिक, न्यायिक, स्थानीय, डिजिटल)।

विस्तृत विवरण :

- **सिविल सेवा नौकरशाही :** 1 मिलियन आईएएस, आईपीएस अधिकारी नीतियों का प्रबंधन करते हैं (जैसे, मनरेगा, भाग 2)।
- **सार्वजनिक क्षेत्र की नौकरशाही :** ओएनजीसी, सेल में 1 मिलियन लोग कार्यरत हैं, पीएसयू का सकल घरेलू उत्पाद में 20% योगदान है।
- **न्यायिक नौकरशाही :** 20,000 जिला न्यायाधीश प्रति वर्ष 10 मिलियन मामले संभालते हैं (भाग 4)।

- **स्थानीय नौकरशाही** : पंचायती राज संस्थाओं में 100,000 बीडीओ ग्रामीण योजनाएं क्रियान्वित करते हैं (50% पंचायती राज निधि, भाग 4)।
- **डिजिटल नौकरशाही** : आधार (1.3 बिलियन उपयोगकर्ता), ई-नाम (20% किसान) सेवाओं को सुव्यवस्थित करते हैं।

4.4 भारतीय संदर्भ में नौकरशाही

- **पैमाना** : 1 मिलियन आईएएस, 20 मिलियन लोक सेवक, 1.4 बिलियन नागरिक।
- **उदाहरण** : आईएएस आधार, 1.3 अरब उपयोगकर्ताओं का प्रबंधन करता है।
- **जनसांख्यिकी** : 10% अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति, 10% उच्च जाति का प्रभुत्व (भाग 1)।
- **दक्षता** : ई-गवर्नेंस (80% यूपीआई, भाग 5), लेकिन 60% देरी (2020)।
- **नीतियाँ** : मनरेगा (50 मिलियन व्यक्ति-दिन), एनईपी 2020 (भाग 2, 3)।
- **चुनौतियाँ** : भ्रष्टाचार (10,000 मामले/वर्ष), लालफीताशाही (50% भुगतान में देरी), डिजिटल विभाजन (20% ग्रामीण)।

विस्तृत भारतीय उदाहरण :

उत्तर प्रदेश में, नौकरशाही 25 करोड़ नागरिकों का प्रबंधन करती है। सिविल सेवा के आईएएस अधिकारी (10,000) वेबर के तर्कसंगत मॉडल के अनुसार, मनरेगा (2 करोड़ व्यक्ति-दिवस, भाग 2) लागू करते हैं, लेकिन मर्टन की लालफीताशाही के अनुसार, 50% भुगतान विलंबित होते हैं। सार्वजनिक क्षेत्र की नौकरशाही (जैसे, यूपी पावर, 50,000 कर्मचारी) बिजली पहुँचाती है (80% ग्रामीण कवरेज), लेकिन पोलान्ट्जास के अभिजात्य पूर्वग्रह के अनुसार, 10% उच्च-जाति के अधिकारी हावी हैं (भाग 1)। न्यायिक नौकरशाही (5,000 न्यायाधीश) 10 लाख मामले/वर्ष संभालती है, जिनमें से 50% अनसुलझे हैं (भाग 4)। स्थानीय नौकरशाही (10,000 बीडीओ) पंचायती राज योजनाओं (50% निधि, भाग 4) को लागू करती है, लेकिन 60% जनता भ्रष्टाचार की रिपोर्ट करती है (10,000 मामले/वर्ष)। आधार (90% कवरेज) और ई-नाम (10% किसान, भाग 2) के माध्यम से डिजिटल नौकरशाही कार्यकुशलता बढ़ाती है, लेकिन 20% ग्रामीण इंटरनेट पहुँच (भाग 4) दलितों (70% कम वेतन वाले, भाग 1) को बाहर कर देती है। डिजिटल सक्रियता (#भ्रष्टाचार-विरोधी, 2,00,000 द्वीप) भ्रष्टाचार को उजागर करती है, लेकिन जातिगत बहिष्कार (10% एससी/एसटी आईएएस, भाग 2) और हिंसा (500 अत्याचार/वर्ष, भाग 3) जारी है, जो भारत के राज्य में नौकरशाही की भूमिका को उजागर करती है।

4.5 सैद्धांतिक दृष्टिकोण

- **तर्कसंगत नौकरशाही (वेबर)** : कुशल, नियम-आधारित (जैसे, आईएएस)।
- **शिथिलता (मर्टन)** : लालफीताशाही, देरी (उदाहरणार्थ, 60% शिकायतें)।
- **राज्य तंत्र (पौलान्ट्जास)** : अभिजात वर्ग के हित (जैसे, उच्च जाति के आईएएस)।
- **कार्यात्मकता (पार्सन्स)** : प्रशासन के माध्यम से स्थिरता (जैसे, आधार)।
- **भारतीय उदाहरण** : वेबर की तर्कसंगतता बनाम मर्टन की दुष्क्रियाएँ।

विस्तृत विश्लेषण :

- **तर्कसंगत नौकरशाही** : वेबर आईएएस (1 मिलियन) को तर्कसंगत मानते हैं, जो मनरेगा (भाग 2) को क्रियान्वित कर रहे हैं।
- **शिथिलताएँ** : मर्टन 60% देरी और 10,000 भ्रष्टाचार के मामलों को नौकरशाही की खामियां मानते हैं।
- **राज्य तंत्र** : पोलान्ट्जास का मानना है कि 10% उच्च जाति के आईएएस अभिजात वर्ग के हितों की सेवा करते हैं (भाग 1)।
- **कार्यात्मकतावाद** : पार्सन्स आधार (1.3 बिलियन उपयोगकर्ता) को राज्य वितरण को स्थिर करने वाला मानते हैं।

4.6 ताकत और सीमाएँ

- **ताकत** :
 - दक्षता सुनिश्चित करता है (80% यूपीआई, आधार)।
 - राज्य को स्थिर करता है (1.4 बिलियन प्रबंधित)।
- **सीमाएँ** :
 - लालफीताशाही (60% देरी)।
 - भ्रष्टाचार (10,000 मामले/वर्ष)

आलोचनाएँ :

- वेबर की तर्कसंगतता भ्रष्टाचार को नजरअंदाज करती है (भाग 5)।
- पोलान्ट्जास का विशिष्ट ध्यान डिजिटल सुधारों को कम महत्व देता है (भाग 5)।
- डिजिटल विभाजन (20% ग्रामीण) नौकरशाही विश्लेषण को चुनौती देता है (भाग 4)।

5. पीवाईक्यू विश्लेषण (2019-2025)

ugcnet.nta.ac.in से प्राप्त PYQ के आधार पर, जनजाति, राष्ट्र राज्य, सीमा और नौकरशाही से यूनिट 5 में प्रति परीक्षा 2-3 प्रश्न पूछे जाते हैं। सामान्य प्रश्न प्रकारों में शामिल हैं:

- अवधारणाओं या प्रकारों की परिभाषा।
- भारतीय संदर्भों में अनुप्रयोग (जैसे, नागा जनजातियाँ, आईएएस)।
- सैद्धांतिक दृष्टिकोण (जैसे, वेबर, बार्थ)।

5.1 नमूना PYQs

1. **जून 2019** : भारतीय संदर्भ में नौकरशाही क्या है?
 - उत्तर : पदानुक्रमित प्रशासन (जैसे, आईएएस, 1 मिलियन)।
 - **व्याख्या** : नौकरशाही अवधारणा का परीक्षण करता है।
2. **दिसंबर 2020** : जनजातियाँ भारतीय राष्ट्र राज्य के साथ कैसे अंतःक्रिया करती हैं?
 - उत्तर : स्वायत्ता की मांग के माध्यम से (जैसे, नागा संघर्ष)।
 - **व्याख्या** : जनजाति-राज्य गतिशीलता का परीक्षण करता है।
3. **जून 2021** : वेबर के अनुसार, नौकरशाही है:
 - उत्तर : तर्कसंगत, नियम-आधारित (जैसे, आईएएस संरचना)।
 - **व्याख्या** : सैद्धांतिक समझ का परीक्षण करता है।
4. **दिसंबर 2022** : भारत में विवादित सीमाएँ क्या हैं?
 - उत्तर : संघर्ष क्षेत्र (जैसे, पूर्वोत्तर, 100,000 विस्थापित)।
 - **स्पष्टीकरण** : सीमा अवधारणा का परीक्षण करता है।
5. **जून 2023** : बार्थ जनजाति-राष्ट्र-राज्य संबंधों को किस प्रकार देखते हैं?
 - उत्तर : जातीय सीमाएँ (जैसे, नागा पहचान)।
 - **व्याख्या** : सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य का परीक्षण करता है।

5.2 रुझान और अपेक्षित प्रश्न

- **रुझान** : 2020-2025 में डिजिटल शासन, जनजातीय स्वायत्ता और पूर्वोत्तर संघर्षों पर अधिक ध्यान केंद्रित किया जाएगा। ई-गवर्नेंस और भ्रष्टाचार पर सवाल आम हैं।
- **अपेक्षित प्रश्न** :
 - आईएएस के उदाहरण के साथ नौकरशाही को परिभाषित करें।
 - अफस्या जनजातीय सीमाओं पर किस प्रकार प्रभाव डालता है?
 - बार्थ के सिद्धांत का उपयोग करके जनजाति-राज्य संबंधों की व्याख्या करें।
- 6. **संशोधन के लिए मुख्य बिंदु**
 - **राज्य, राजनीति, विकास** : राज्य-आंदोलन परस्पर क्रिया (एसपीडीएसआई)।
 - **जनजाति** : सांस्कृतिक पहचान, हाशिए पर (टीएसबीएमडी, आईआईसीएसटी)।
 - **राष्ट्र राज्य** : संप्रभुता, एकता (जैसे, 900 मिलियन मतदाता)।
 - **सीमा** : विवादित क्षेत्र (जैसे, पूर्वोत्तर, 100,000 विस्थापित)।
 - **नौकरशाही** : तर्कसंगत प्रशासन (एचआरआईएसआई, सीपीजेएलडी)।
 - **भारतीय संदर्भ** : नागा संघर्ष, आईएएस, आधार, डिजिटल विभाजन।
- 7. **स्मृति सहायक और स्मृति सहायक**
 - **राज्य, राजनीति, विकास विशेषताएँ** : एसपीडीएसआई (राज्य, राजनीतिक, विकास, सामाजिक, असमानता)।
 - **जनजाति, राष्ट्र राज्य, सीमा विशेषताएँ** : टीएसबीएमडी (आदिवासी, राज्य, सीमा, हाशिए पर, गतिशील)।
 - **जनजाति, राष्ट्र राज्य, सीमा प्रकार** : आईआईसीएसटी (पृथक, एकीकृत, विवादित, स्थिर, जनजातीय)।
 - **नौकरशाही की विशेषताएँ** : एचआरआईएसआई (पदानुक्रम, नियम-आधारित, अवैयक्तिकता, विशेषज्ञता, अकुशलताएँ)।
 - **नौकरशाही के प्रकार** : सीपीजेएलडी (सिविल, सार्वजनिक, न्यायिक, स्थानीय, डिजिटल)।

8. अभ्यास प्रश्न (MCQs)

1. **भारतीय संदर्भ में नौकरशाही क्या है?**
 - a) ग्रामीण शासन
 - b) पदानुक्रमित प्रशासन
 - c) डिजिटल सक्रियता
 - d) जनजातीय स्वायत्ता

उत्तर : b) पदानुक्रमित प्रशासन

स्पष्टीकरण : उदाहरण, आईएएस, 1 मिलियन अधिकारी।
2. **भारत में जनजाति-राष्ट्र राज्य संबंधों में शामिल हैं :**
 - a) डिजिटल समानता
 - b) स्वायत्ता की मांग
 - c) शहरी प्रवास
 - d) जातिगत सद्व्याव

उत्तर : b) स्वायत्ता की मांग

स्पष्टीकरण : उदाहरण, नागा संघर्ष, 100 संघर्ष/वर्ष।

3. भारत में विवादित सीमाओं में शामिल हैं:

- a) भारत-नेपाल व्यापार
- b) पूर्वोत्तर संघर्ष
- c) डिजिटल प्लेटफॉर्म
- d) शहरी परिक्षेत्र

उत्तर : b) पूर्वोत्तर संघर्ष

स्पष्टीकरण : उदाहरण, मणिपुर, 100,000 विस्थापित।

4. वेबर का नौकरशाही सिद्धांत जोर देता है:

- a) प्रष्टाचार
- b) तर्कसंगत नियम
- c) आदिवासी पहचान
- d) डिजिटल सक्रियता

उत्तर : b) तर्कसंगत नियम

स्पष्टीकरण : उदाहरण, आईएएस, यूपीएससी योग्यता।

5. बार्थ का सिद्धांत जनजाति-राज्य संबंधों को इस रूप में देखता है :

- a) आर्थिक संघर्ष
- b) जातीय सीमाएँ
- c) डिजिटल एकीकरण
- d) शहरी विकास

उत्तर : b) जातीय सीमाएँ

व्याख्या : उदाहरण, नागा पहचान की मांग।

6. भारत में डिजिटल नौकरशाही में शामिल हैं:

- a) ग्रामीण विरोध
- b) आधार, ई-एनएएम
- c) आदिवासी त्यौहार
- d) जातिगत हिंसा

उत्तर : b) आधार, ई-एनएएम

स्पष्टीकरण : 1.3 बिलियन उपयोगकर्ता, 20% किसान।

7. भारत में जनजातीय हाशिए में शामिल हैं:

- a) शहरी धन
- b) भूमि विस्थापन
- c) डिजिटल समानता
- d) राजनीतिक सुधार

उत्तर : b) भूमि विस्थापन

स्पष्टीकरण : 50% एसटी भूमिहीन, भाग 2।

8. भारत में पृथक जनजातियों में शामिल है:

- a) भील, 20% शहरीकृत
- b) सेंटिनली, स्वायत्त
- c) नागा, संघर्षरत
- d) संथाल, एकीकृत

उत्तर : b) सेंटिनली, स्वायत्त

व्याख्या : 100% दूरस्थ, अंडमान।

9. मर्टन के नौकरशाही सिद्धांत पर प्रकाश डाला गया है :

- a) तर्कसंगत दक्षता
- b) लालफीताशाही शिथिलता
- c) आदिवासी स्वायत्तता
- d) डिजिटल शासन

उत्तर : b) लालफीताशाही शिथिलता

स्पष्टीकरण : उदाहरण, 60% देरी, 2020।



10. जनजातीय क्षेत्रों में डिजिटल विभाजन की सीमा:

- a) शहरी नौकरियां
- b) इंटरनेट का उपयोग (20% ग्रामीण)
- c) जाति एकीकरण
- d) राजनीतिक सुधार

उत्तर : b) इंटरनेट का उपयोग (20% ग्रामीण)

स्पष्टीकरण : # जनजातीय अधिकारों से एस्टी को बाहर रखा गया है।

9. हालिया घटनाक्रम

- जनजातीय गतिशीलता (2025) : 8.6% जनसंख्या (104 मिलियन), 50% गरीबी, पूर्वोत्तर में 100,000 विस्थापित, #जनजातीय अधिकार (1 मिलियन द्वीट), लेकिन 20% ग्रामीण इंटरनेट (भाग 4)।
- नौकरशाही : 1 मिलियन आईएस अधिकारी, आधार (1.3 बिलियन उपयोगकर्ता), ई-एनएएम (20% किसान), लेकिन 10,000 भ्रष्टाचार के मामले/वर्ष, 60% देरी (2020)।
- राष्ट्र राज्य : 900 मिलियन मतदाता, 7% जीडीपी वृद्धि, लेकिन 1,000 जाति अत्याचार/वर्ष (भाग 3), 100 जनजातीय संघर्ष (भाग 3)।
- भारतीय समाजशास्त्र : जनजातीय स्वायत्तता (नागा मांगे), नौकरशाही (आईएस प्रभुत्व), और डिजिटल शासन (80% यूपीआई, भाग 5) राज्य की गतिशीलता को आकार देते हैं, एनईपी 2020 कौशल को संबोधित करता है (भाग 3)।
- वैश्विक रुझान : वैश्वीकृत सीमाएं (10% एफडीआई, भाग 5), संयुक्त राष्ट्र शांति स्थापना (5,000 सैनिक, भाग 4), और जलवायु जोखिम (सूखा, भाग 2) जनजाति-राज्य संबंधों को प्रभावित करते हैं।

2: शासन और विकास, सार्वजनिक नीति: स्वास्थ्य

1. शासन और विकास

1.1 परिभाषा और महत्व

शासन उन प्रक्रियाओं, संस्थाओं और तंत्रों को संदर्भित करता है जिनके माध्यम से राज्य और गैर-राज्य निकाय सार्वजनिक मामलों का प्रबंधन करते हैं, जवाबदेही, पारदर्शिता और भागीदारी सुनिश्चित करते हैं। विकास आर्थिक विकास, सामाजिक प्रगति और संस्थागत सुधारों के माध्यम से सामाजिक कल्याण में सुधार की प्रक्रिया है, जिसे अक्सर सकल घरेलू उत्पाद, साक्षरता और स्वास्थ्य जैसे संकेतकों द्वारा मापा जाता है। समाजशास्त्र में, ये अवधारणाएँ राज्य-समाज संबंधों और प्रगति का विश्लेषण करती हैं।

- मुख्य विचार : शासन विकास को गति देता है, सामाजिक परिणामों को आकार देता है।
- प्रमुख विचारक :
 - अमर्त्य सेन : विकास क्षमता विस्तार के रूप में (जैसे, स्वतंत्रता, स्वास्थ्य)।
 - ज्यां द्रेज : समावेशी नीति वितरण के रूप में शासन (जैसे, कल्याण)।
 - जेम्स स्कॉट : राज्य शासन को "राज्य की तरह देखना", ऊपर से नीचे तक नियंत्रण।
- उद्देश्य :
 - राज्य प्रबंधन (जैसे, ई-गवर्नेंस, आधार) की व्याख्या करता है।
 - प्रगति का विश्लेषण करता है (उदाहरण के लिए, 74% साक्षरता, इकाई 4, भाग 4.1)।
 - असमानता को संदर्भित बनाता है (उदाहरण के लिए, 30% गरीबी)।

विस्तृत व्याख्या :

सेन का क्षमता दृष्टिकोण विकास को स्वतंत्रता में वृद्धि के रूप में परिभाषित करता है, जहाँ भारत की 74% साक्षरता दर (2025) और 70 वर्ष की जीवन प्रत्याशा (इकाई 4, भाग 4.2) में वृद्धि देखी गई है, हालाँकि 30% दलित गरीबी रेखा से नीचे हैं और 70% दलित कम वेतन वाली नौकरियों में हैं (इकाई 4, भाग 4.1)। द्रेज समावेशी शासन पर ज़ोर देते हैं, जहाँ मनरेगा (5 करोड़ व्यक्ति-दिवस, इकाई 4, भाग 4.2) जैसी योजनाएँ कल्याणकारी हैं, लेकिन 60% देरी अभी भी जारी है (भाग 1)। स्कॉट का "राज्य की तरह देखना" शीर्ष-स्तरीय नीतियों की आलोचना करता है, जहाँ आधार (1.3 अरब उपयोगकर्ता, भाग 1) सेवाओं को सुव्यवस्थित करता है, लेकिन डिजिटल विभाजन के कारण 20% ग्रामीण आबादी को इससे बाहर रखता है (इकाई 4, भाग 4.4)। भारत के शासन में 10 लाख आईएस अधिकारी (भाग 1) 1.4 अरब नागरिकों का प्रबंधन करते हैं, और ई-गवर्नेंस (80% यूपीआई लेनदेन, इकाई 4, भाग 4.5) दक्षता बढ़ाता है। विकास 7% जीडीपी वृद्धि दर हासिल करता है, लेकिन जाति (20% दलित बहिष्कृत, इकाई 4, भाग 4.3), लिंग (25% महिला कार्यबल, इकाई 4, भाग 4.9), और जनजातीय असमानताएँ (50% अनुसूचित जनजाति गरीबी, भाग 1) बनी हुई हैं। डिजिटल प्लेटफॉर्म (#सुशासन, 5,00,000 द्वीट) जवाबदेही की माँग करते हैं, लेकिन भ्रष्टाचार (10,000 मामले/वर्ष, भाग 1) और डिजिटल बहिष्करण (20% ग्रामीण) प्रगति को चुनौती देते हैं, जिससे शासन और विकास यूजीसी नेट जेआरएफ के लिए महत्वपूर्ण हो जाते हैं।

1.2 शासन और विकास की विशेषताएँ

- जवाबदेही : पारदर्शी निर्णय लेना (जैसे, आरटीआई)।
- भागीदारी : नागरिक भागीदारी (उदाहरणार्थ, 900 मिलियन मतदाता)।

- **दक्षता** : प्रभावी वितरण (जैसे, ई-गवर्नेंस)।
- **समानता** : समावेशी प्रगति (जैसे, आरक्षण)।
- **असमानता** : निरंतर अंतराल (जैसे, 30% गरीबी)।

स्मृति सहायक : एपीईईआई (जवाबदेही, भागीदारी, दक्षता, समानता, असमानता)।

विस्तृत विवरण :

- **जवाबदेही** : आरटीआई (1 मिलियन आवेदन/वर्ष) पारदर्शिता सुनिश्चित करता है, लेकिन 60% जनता भ्रष्टाचार की रिपोर्ट करती है (2020, भाग 1)।
- **भागीदारी** : 900 मिलियन मतदाता (70% मतदान, 2024) और पीआरआई (50% निधि, भाग 1) सहभागिता को सक्षम बनाते हैं।
- **दक्षता** : ई-गवर्नेंस (आधार, 1.3 बिलियन उपयोगकर्ता) सेवाओं को सुव्यवस्थित करता है, 80% यूपीआई (यूनिट 4, भाग 4.5)।
- **समानता** : 7.5% एसटी, 15% एससी आरक्षण (भाग 1) समावेशन को बढ़ावा देता है, लेकिन 70% दलित कम वेतन पाते हैं (इकाई 4, भाग 4.1)।
- **असमानता** : 30% गरीबी रेखा से नीचे, 25% महिला कार्यबल, 50% अनुसूचित जनजाति हाशिए पर (भाग 1)।

1.3 शासन और विकास मॉडल के प्रकार

- **लोकतांत्रिक शासन** : नागरिक-संचालित (जैसे, चुनाव)।
- **ई-गवर्नेंस** : डिजिटल प्रशासन (जैसे, आधार)।
- **सहभागी शासन** : जमीनी स्तर पर भागीदारी (जैसे, पीआरआई)।
- **आर्थिक विकास** : विकास-केंद्रित (उदाहरणार्थ, 7% जीडीपी)।
- **मानव विकास** : क्षमता-केंद्रित (उदाहरणार्थ, एचडीआई 0.64)।

स्मृति सहायक : डीईपीईएच (लोकतांत्रिक, ई-गवर्नेंस, सहभागी, आर्थिक, मानवीय)।

विस्तृत विवरण :

- **लोकतांत्रिक शासन** : 900 मिलियन मतदाता 543 सांसदों का चुनाव करते हैं, 70% मतदान (2024)।
- **ई-गवर्नेंस** : आधार (1.3 बिलियन उपयोगकर्ता), ई-एनएएम (20% किसान, भाग 1) सेवाओं का डिजिटलीकरण।
- **सहभागी शासन** : पीआरआई (100,000 बीडीओ, भाग 1) 50% ग्रामीण निधियों का प्रबंधन करते हैं।
- **आर्थिक विकास** : 7% जीडीपी वृद्धि, 60% शहरी जीडीपी (इकाई 4, भाग 4.5)।
- **मानव विकास** : एचडीआई 0.64, 74% साक्षरता, लेकिन 30% गरीबी (इकाई 4, भाग 4.2)।

1.4 भारतीय संदर्भ में शासन और विकास

- **पैमाना** : 1.4 अरब नागरिक, 900 मिलियन मतदाता, 7% जीडीपी वृद्धि।
- **उदाहरण** : आधार (1.3 बिलियन उपयोगकर्ता), मनरेगा (50 मिलियन व्यक्ति-दिन)।
- **जनसांख्यिकी** : 20% दलित, 8.6% अनुसूचित जनजाति, 30% शहरी (इकाई 4, भाग 4.4)।
- **उपलब्धियाँ** : 74% साक्षरता, 70 वर्ष की जीवन प्रत्याशा, 80% यूपीआई।
- **नीतियाँ** : आरटीआई (1 मिलियन आवेदन), एनईपी 2020, स्मार्ट सिटीज़ (100 नियोजित, यूनिट 4, भाग 4.4)।
- **चुनौतियाँ** : 30% गरीबी, 60% नौकरशाही देरी, 20% ग्रामीण डिजिटल विभाजन (इकाई 4, भाग 4.4)।

विस्तृत भारतीय उदाहरण :

बिहार में, शासन और विकास प्रगति और चुनौतियों को दर्शाते हैं। लोकतांत्रिक शासन 8 करोड़ मतदाताओं (70% मतदान, 2024) को शामिल करता है, जिसमें जातिगत वोट बैंक (20% दलित सांसद, इकाई 4, भाग 4.1) राजनीति को आकार देते हैं, जैसा कि सेन की क्षमता रूपरेखा में बताया गया है। आधार (90% कवरेज, भाग 1) और ई-नाम (10% किसान, भाग 1) के माध्यम से ई-गवर्नेंस मनरेगा (20 मिलियन व्यक्ति-दिवस, इकाई 4, भाग 4.2) प्रदान करता है, लेकिन 60% भुगतान विलंबित होते हैं (भाग 1), जैसा कि द्रेज की समावेशी आलोचना में बताया गया है। पंचायती राज संस्थाओं (10,000 बीडीओ, भाग 1) के माध्यम से सहभागी शासन 50% ग्रामीण निधि आवंटित करता है, लेकिन 50% गाँवों में भ्रष्टाचार की सूचना है (2020)। आर्थिक विकास 6% राज्य जीडीपी वृद्धि प्राप्त करता है, लेकिन 30% गरीबी रेखा से नीचे रहते हैं (इकाई 4, भाग 4.2)। मानव विकास सूचकांक (0.58) में सुधार करता है, 70% साक्षरता दर (इकाई 4, भाग 4.2) के साथ, लेकिन 70% दलित कम वेतन वाले हैं (इकाई 4, भाग 4.1) और 25% महिलाएँ काम करती हैं (इकाई 4, भाग 4.9)। डिजिटल प्लेटफॉर्म (#सुशासन, 2,00,000 ट्रीट) जवाबदेही की माँग करते हैं, लेकिन 20% ग्रामीण इंटरनेट पहुँच (इकाई 4, भाग 4.4) आदिवासियों को इससे बाहर रखती है (50% गरीबी, भाग 1)। सूचना का अधिकार (1,00,000 आवेदन) और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (10,000 नौकरियाँ) प्रगति को गति देते हैं, लेकिन जातिगत हिंसा (500 मामले/वर्ष, इकाई 4, भाग 4.3) और डिजिटल विभाजन अभी भी जारी हैं, जो भारत की राजनीति में शासन और विकास की भूमिका को रेखांकित करते हैं।

1.5 सैद्धांतिक दृष्टिकोण

- **क्षमता दृष्टिकोण (सेन)** : स्वतंत्रता के रूप में विकास (उदाहरणार्थ, साक्षरता)।
- **समावेशी शासन (Drè)** : कल्याणकारी वितरण (जैसे, मनरेगा)।

- **राज्य की तरह देखना (स्कॉट)** : ऊपर से नीचे तक नियंत्रण (जैसे, आधार)।
- **संघर्ष सिद्धांत (मार्क्स)** : शासन अभिजात वर्ग की सेवा करता है (उदाहरण के लिए, 10% उच्च जाति के आईएएस, भाग 1)।
- **भारतीय उदाहरण** : सेन की क्षमता बनाम स्कॉट का नियंत्रण।

विस्तृत विश्लेषण :

- **क्षमता दृष्टिकोण** : सेन 74% साक्षरता, 70 वर्ष की जीवन प्रत्याशा को स्वतंत्रता का विस्तार मानते हैं, लेकिन 30% गरीबी लाभ को सीमित करती है।
- **समावेशी शासन** : ड्रेज मनरेगा (50 मिलियन यूनिट) को समावेशी मानते हैं, लेकिन 60% देरी से क्रियान्वयन में बाधा उत्पन्न होती है (भाग 1)।
- **एक राज्य की तरह देखना** : स्कॉट ने आधार के शीर्ष-से-नीचे नियंत्रण की आलोचना की, जिसमें 10% ग्रामीण गरीबों को शामिल नहीं किया गया (20% इंटरनेट से वंचित, भाग 1)।
- **संघर्ष सिद्धांत** : मार्क्स शासन को अभिजात वर्ग (10% उच्च जाति के आईएएस) के पक्ष में देखते हैं, जिसमें 70% दलित हाशिए पर हैं (इकाई 4, भाग 4.1)।

1.6 ताकत और सीमाएँ

• ताकत :

- प्रगति को बढ़ावा देता है (74% साक्षरता, 7% सकल घरेलू उत्पाद)।
- भागीदारी में वृद्धि (900 मिलियन मतदाता)।

• सीमाएँ :

- लगातार असमानता (30% गरीबी)।
- नौकरशाही अक्षमताएँ (60% देरी)।

आलोचनाएँ :

- सेन की क्षमता संरचनात्मक बाधाओं (जैसे, जाति, भाग 3) को नजरअंदाज करती है।
- स्कॉट की नियंत्रण आलोचना सहभागिता लाभ को कम करके अंकती है (उदाहरण के लिए, पीआरआई, भाग 4)।
- डिजिटल विभाजन (20% ग्रामीण) शासन विश्लेषण को चुनौती देता है (इकाई 4, भाग 4.4)।

दृश्य सहायता : शासन और विकास मॉडल की तालिका

प्रकार	विवरण	भारतीय उदाहरण
लोकतांत्रिक	नागरिक-संचालित शासन	900 मिलियन मतदाता, 70% मतदान
ई-शासन	डिजिटल प्रशासन	आधार, 1.3 अरब उपयोगकर्ता
भागीदारी	जमीनी स्तर पर भागीदारी	पंचायती राज संस्थाएं, 50% ग्रामीण निधि
आर्थिक विकास	जीडीपी-केंद्रित विकास	7% जीडीपी, 60% शहरी योगदान
मानव विकास	क्षमता-केंद्रित प्रगति	मानव विकास सूचकांक 0.64, साक्षरता 74%

2. सार्वजनिक नीति: स्वास्थ्य

2.1 परिभाषा और महत्व

सार्वजनिक नीति: स्वास्थ्य का तात्पर्य कार्यक्रमों, बुनियादी ढाँचे और वित्त पोषण के माध्यम से जनसंख्या के स्वास्थ्य में सुधार के लिए राज्य के हस्तक्षेपों से है, जो बीमारियों, पोषण और देखभाल तक पहुँच को संबोधित करते हैं। समाजशास्त्र में, यह स्वास्थ्य असमानताओं, राज्य की ज़िम्मेदारी और सामाजिक समानता का विश्लेषण करता है।

- **मुख्य विचार** : स्वास्थ्य नीति असमानताओं को कम करती है, कल्याण को बढ़ाती है।

• प्रमुख विचारक :

- **अमर्त्य सेन** : स्वास्थ्य एक क्षमता है, रोग से मुक्ति।
- **पॉल फार्मर** : स्वास्थ्य असमानताओं में संरचनात्मक हिंसा (जैसे, जाति)।
- **मिक कारपेंटर** : सामाजिक निर्धारक के रूप में स्वास्थ्य नीति (जैसे, पोषण)।

• उद्देश्य :

- स्वास्थ्य परिणामों (जैसे, 70 वर्ष की जीवन प्रत्याशा) की व्याख्या करता है।
- असमानताओं का विश्लेषण (उदाहरणार्थ, 30% ग्रामीण बीमा रहित)।
- नीति को प्रासादिक बनाता है (जैसे, आयुष्मान भारत)।

विस्तृत व्याख्या :

सेन का क्षमता दृष्टिकोण स्वास्थ्य को स्वतंत्रता के लिए आवश्यक मानता है, भारत की 70 वर्ष की जीवन प्रत्याशा और 80% मातृ मृत्यु दर में कमी (100/100,000, 2020) इकाई 2 के अनुसार प्रगति को दर्शाती है। किसान की संरचनात्मक हिंसा असमानताओं की आलोचना करती है, जिसमें 30% ग्रामीण दलितों का बीमा नहीं है और 50% एसटी के पास अस्पताल तक पहुँच नहीं है (इकाई 4, भाग 4.1)।

कारपेंटर के सामाजिक निर्धारिक पोषण (50% ग्रामीण बच्चे कुपोषित) और स्वच्छता (25% शौचालय नहीं, इकाई 4, भाग 2) पर प्रकाश डालते हैं। आयुष्मान भारत (500 मिलियन कवर, ₹5 लाख/वर्ष) के माध्यम से भारत की स्वास्थ्य नीति का लक्ष्य सार्वभौमिक स्वास्थ्य कवरेज (यूएचसी) है, जिसे 10 लाख आशा कार्यकर्ताओं का समर्थन प्राप्त है डिजिटल स्वास्थ्य प्लेटफॉर्म (ई-संजीवनी, 10 मिलियन टेलीकंसल्टेशन) और शहरी विकास (30% स्लम स्वास्थ्य मुद्दे, यूनिट 4, भाग 5) पहुंच को आकार देते हैं, लेकिन डिजिटल विभाजन (20% ग्रामीण इंटरनेट, यूनिट 4, भाग 4) और भ्रष्टाचार (5% स्वास्थ्य निधि का दुरुपयोग) प्रभाव को सीमित करते हैं, जिससे यूजीसी नेट जेआरएफ के लिए स्वास्थ्य नीति महत्वपूर्ण हो जाती है।

2.2 सार्वजनिक नीति की विशेषताएँ: स्वास्थ्य

- **सार्वभौमिक पहुंच** : समान देखभाल (जैसे, आयुष्मान भारत)।
- **निवारक फोकस** : टीकाकरण, पोषण (जैसे, आईसीडीएस)।
- **बुनियादी ढांचा** : 1,000,000 अस्पताल बिस्तर, 1 मिलियन आशा कार्यकर्ता।
- **असमानताएं** : जाति, ग्रामीण-शहरी अंतर (जैसे, 30% बीमा रहित)।
- **डिजिटल नवाचार** : टेलीमेडिसिन, ई-स्वास्थ्य (जैसे, ई-संजीवनी)।

स्मृति सहायक : यूपीआईडीडी (यूनिवर्सल, प्रिवेटिव, इंफ्रास्ट्रक्चर, असमानताएं, डिजिटल)।

विस्तृत विवरण :

- **सार्वभौमिक पहुंच** : आयुष्मान भारत 500 मिलियन, ₹5 लाख/वर्ष को कवर करता है, लेकिन 30% ग्रामीण बीमाकृत नहीं हैं।
- **निवारक फोकस** : आईसीडीएस 90% बच्चों का टीकाकरण करता है, 60% को पोषण प्रदान करता है, लेकिन 50% ग्रामीण बच्चे कुपोषित हैं।
- **बुनियादी ढांचा** : 10 लाख अस्पताल बिस्तर, 10 लाख आशा कार्यकर्ता, लेकिन 20% ग्रामीण क्षेत्रों में अस्पतालों का अभाव है।
- **असमानताएं** : 30% दलित, 50% अनुसूचित जनजाति बीमा रहित, 60% महिलाएं एनीमिया से ग्रस्त (इकाई 4, भाग 3)।
- **डिजिटल नवाचार** : ई-संजीवनी (10 मिलियन टेलीकंसल्टेशन), लेकिन 20% ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट का अभाव (यूनिट 4, भाग 4)।

2.3 स्वास्थ्य पॉलिसियों के प्रकार

- **सार्वभौमिक स्वास्थ्य कवरेज** : सब्सिडीयुक्त देखभाल (जैसे, आयुष्मान भारत)।
- **निवारक स्वास्थ्य** : टीकाकरण, स्वच्छता (जैसे, स्वच्छ भारत)।
- **मातृ-शिशु स्वास्थ्य** : केंद्रित कार्यक्रम (जैसे, जननी सुरक्षा)।
- **मानसिक स्वास्थ्य** : उभरता हुआ फोकस (उदाहरण के लिए, एनएमएचपी 2020)।
- **डिजिटल स्वास्थ्य** : टेलीमेडिसिन, ऐप्स (जैसे, आरोग्य सेतु)।

स्मृति सहायक : यूपीएमएचडी (सार्वभौमिक, निवारक, मातृ-शिशु, मानसिक, डिजिटल)।

विस्तृत विवरण :

- **सार्वभौमिक स्वास्थ्य कवरेज** : आयुष्मान भारत (500 मिलियन, ₹5 लाख/वर्ष) 40% जनसंख्या को बीमा प्रदान करता है।
- **निवारक स्वास्थ्य** : स्वच्छ भारत अभियान के तहत 100 मिलियन शौचालयों का निर्माण, 90% टीकाकरण कवरेज।
- **मातृ-शिशु स्वास्थ्य** : जननी सुरक्षा (10 मिलियन लाभार्थी) मातृ मृत्यु दर (100/100,000) को कम करती है।
- **मानसिक स्वास्थ्य** : एनएमएचपी 2020 10% मानसिक रूप से बीमार लोगों को सहायता प्रदान करता है, लेकिन 80% तक पहुंच का अभाव है।
- **डिजिटल स्वास्थ्य** : आरोग्य सेतु (200 मिलियन उपयोगकर्ता), ईसंजीवनी (10 मिलियन परामर्श)।

2.4 सार्वजनिक नीति: भारतीय संदर्भ में स्वास्थ्य

- **पैमाना** : 1.4 अरब जनसंख्या, 70 वर्ष की जीवन प्रत्याशा, 500 मिलियन बीमित।
- **उदाहरण** : आयुष्मान भारत, 500 मिलियन कवर, ₹5 लाख/वर्ष।
- **जनसांख्यिकी** : 20% दलित, 8.6% अनुसूचित जनजाति, 30% शहरी (इकाई 4, भाग 4.4)।
- **उपलब्धियां** : 90% टीकाकरण, 80% मातृ मृत्यु दर में कमी।
- **नीतियां** : आयुष्मान भारत, स्वच्छ भारत, एनएमएचपी 2020।
- **चुनौतियाँ** : 30% बीमा रहित, 50% कुपोषित बच्चे, 20% ग्रामीण डिजिटल विभाजन।

विस्तृत भारतीय उदाहरण :

उत्तर प्रदेश में, स्वास्थ्य नीति 250 मिलियन नागरिकों को संबोधित करती है। आयुष्मान भारत (100 मिलियन कवर, ₹5 लाख/वर्ष) सेन के क्षमता दृष्टिकोण के अनुसार 40% आबादी का बीमा करता है, लेकिन किसान संरचनात्मक हिंसा के अनुसार 30% ग्रामीण दलित बिना बीमा के रहते हैं (इकाई 4, भाग 4.1)। स्वच्छ भारत (20 मिलियन शौचालय) और आईसीडीएस (90% टीकाकरण) के माध्यम से निवारक स्वास्थ्य बीमारियों को कम करता है, लेकिन कारपेंटर के निर्धारिकों के अनुसार 50% ग्रामीण बच्चे कुपोषित हैं। जननी सुरक्षा (5 मिलियन लाभार्थी) के माध्यम से मातृ-शिशु स्वास्थ्य मातृ मृत्यु दर (150/100,000) को कम करता है, लेकिन 60% महिलाएं एनीमिया से ग्रस्त हैं (इकाई 4, भाग 3)। एनएमएचपी 2020 के तहत मानसिक स्वास्थ्य 5% रोगियों का समर्थन करता है, लेकिन 80% तक पहुंच नहीं है। ई-

संजीवनी (20 लाख टेली-परामर्श) के माध्यम से डिजिटल स्वास्थ्य शहरी क्षेत्रों (30% जनसंख्या, इकाई 4, भाग 4.4) के लिए मददगार है, लेकिन 20% ग्रामीण इंटरनेट पहुंच (इकाई 4, भाग 4.4) अनुसूचित जनजातियों (50% गरीबी, भाग 1) को इससे बाहर रखती है। आशा कार्यकर्ता (2,00,000) स्वास्थ्य सेवा प्रदान करती हैं, लेकिन 20% ग्रामीण क्षेत्रों में अस्पतालों का अभाव है। भ्रष्टाचार (5% स्वास्थ्य निधि का दुरुपयोग) और जातिगत हिंसा (500 मामले/वर्ष, इकाई 4, भाग 4.3) प्रगति में बाधा डालते हैं, और #HealthForAll (2,00,000 ट्रीट) सुधार की मांग करते हुए भारत के विकास में स्वास्थ्य नीति की भूमिका पर प्रकाश डालते हैं।

2.5 सैद्धांतिक दृष्टिकोण

- क्षमता दृष्टिकोण (सेन) : स्वतंत्रता के रूप में स्वास्थ्य (उदाहरण के लिए, 70 वर्ष की जीवन प्रत्याशा)।
- संरचनात्मक हिंसा (किसान) : पहुंच में असमानताएं (उदाहरणार्थ, 30% बीमा रहित)।
- सामाजिक निधारिक (कारपेटर) : पोषण, स्वच्छता (उदाहरणार्थ, 50% कुपोषित)।
- संघर्ष सिद्धांत (मार्क्स) : स्वास्थ्य नीति अभिजात वर्ग की सेवा करती है (उदाहरण के लिए, शहरी पूर्वाग्रह)।
- भारतीय उदाहरण : सेन की क्षमता बनाम किसान की संरचनात्मक हिंसा।

विस्तृत विश्लेषण :

- क्षमता दृष्टिकोण : सेन का मानना है कि आयुष्मान भारत (500 मिलियन) स्वास्थ्य स्वतंत्रता को बढ़ाएगा, लेकिन 30% बीमा रहित होने से लाभ सीमित हो जाएगा।
- संरचनात्मक हिंसा : किसान 30% दलितों, 50% अनुसूचित जनजातियों के बीमा रहित होने को प्रणालीगत बहिष्कार के रूप में देखते हैं (इकाई 4, भाग 4.1)।
- सामाजिक निधारिक : कारपेटर 50% ग्रामीण कुपोषण को खराब स्वच्छता, पोषण (इकाई 4, भाग 4.2) से जोड़ते हैं।
- संघर्ष सिद्धांत : मार्क्स शहरी पूर्वाग्रह (40% अस्पताल पहुंच) को अभिजात वर्ग के पक्ष में, तथा ग्रामीण गरीबों (20% पहुंच) को हाशिए पर देखते हैं।

2.6 ताकत और सीमाएँ

- ताकत :
 - स्वास्थ्य में सुधार (70 वर्ष की जीवन प्रत्याशा)।
 - पहुंच का विस्तार (500 मिलियन बीमित)।
- सीमाएँ :
 - असमानताएं (30% बीमा रहित)।
 - भ्रष्टाचार (5% निधि का दुरुपयोग)।



आलोचनाएँ :

- सेन की क्षमता जातिगत असमानताओं को नजरअंदाज करती है (इकाई 4, भाग 4.3)।
- किसानों की हिंसा नीतिगत लाभों को कम करके आंकती है (जैसे, 90% टीकाकरण)।
- डिजिटल विभाजन (20% ग्रामीण) स्वास्थ्य नीति विश्लेषण को चुनौती देता है (इकाई 4, भाग 4.4)।

3. पीवाईक्यू विश्लेषण (2019-2025)

ugcnet.nta.ac.in से प्राप्त PYQs के आधार पर, शासन, विकास और सार्वजनिक नीति: स्वास्थ्य इकाई 5 में प्रति परीक्षा 2-3 प्रश्नों का योगदान करते हैं। सामान्य प्रश्न प्रकारों में शामिल हैं:

- अवधारणाओं या प्रकारों की परिभाषा।
- भारतीय संदर्भों में अनुप्रयोग (जैसे, आधार, आयुष्मान भारत)।
- सैद्धांतिक दृष्टिकोण (जैसे, सेन, किसान)।

3.1 नमूना PYQs

- जून 2019 : भारतीय संदर्भ में शासन क्या है?
- उत्तर : राज्य प्रबंधन, जवाबदेही (जैसे, आधार)।
- स्पष्टीकरण : शासन अवधारणा का परीक्षण करता है।
- दिसंबर 2020 : आयुष्मान भारत भारतीय स्वास्थ्य पर कैसे प्रभाव डालता है?
- उत्तर : 500 मिलियन का बीमा, लेकिन 30% का बीमा नहीं (यूनिट 4, भाग 4.2)।
- व्याख्या : स्वास्थ्य नीति गतिशीलता का परीक्षण करता है।
- जून 2021 : सेन के अनुसार, विकास है:
- उत्तर : क्षमता विस्तार (जैसे, 74% साक्षरता)।
- व्याख्या : सैद्धांतिक समझ का परीक्षण करता है।
- दिसंबर 2022 : भारत में ई-गवर्नेंस क्या है?
- उत्तर : डिजिटल प्रशासन (जैसे, ई-नाम, 20% किसान)।
- स्पष्टीकरण : परीक्षण शासन प्रकार।

- **जून 2023** : किसान भारतीय स्वास्थ्य असमानताओं को कैसे देखते हैं?
- **उत्तर** : संरचनात्मक हिंसा (जैसे, 30% बीमा रहित)।
- **व्याख्या** : सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य का परीक्षण करता है।

3.2 रुझान और अपेक्षित प्रश्न

- **रुझान** : 2020-2025 में ई-गवर्नेंस, आयुष्मान भारत और जाति-स्वास्थ्य असमानताओं पर ज्यादा ध्यान। डिजिटल स्वास्थ्य और यूएचसी पर सवाल आम हैं।

• **अपेक्षित प्रश्न**:

- आधार के उदाहरण से शासन को परिभाषित करें।
- स्वच्छ भारत स्वास्थ्य परिणामों पर किस प्रकार प्रभाव डालता है?
- सेन के क्षमता दृष्टिकोण का उपयोग करते हुए स्वास्थ्य नीति की व्याख्या करें।

4. संशोधन के लिए मुख्य बिंदु

- **शासन** : जवाबदेही, ई-गवर्नेंस (एपीईईआई, डीईपीईएच)।
- **विकास** : क्षमता, आर्थिक विकास (जैसे, 7% जीडीपी)।
- **सार्वजनिक नीति: स्वास्थ्य** : यूएचसी, निवारक देखभाल (यूपीआईडीडी, यूपीएमएचडी)।
- **भारतीय संदर्भ** : आधार, आयुष्मान भारत, 30% बिना बीमा, डिजिटल विभाजन।

5. स्मृति सहायक और स्मृति सहायक

- **शासन और विकास विशेषताएँ** : एपीईईआई (जवाबदेही, भागीदारी, दक्षता, समानता, असमानता)।
- **शासन और विकास के प्रकार** : डीईपीईएच (लोकतांत्रिक, ई-शासन, भागीदारी, आर्थिक, मानवीय)।
- **सार्वजनिक नीति: स्वास्थ्य विशेषताएँ** : यूपीआईडीडी (सार्वभौमिक, निवारक, बुनियादी ढाँचा, असमानताएँ, डिजिटल)।
- **सार्वजनिक नीति: स्वास्थ्य प्रकार** : यूपीएमएचडी (सार्वभौमिक, निवारक, मातृ-शिशु, मानसिक, डिजिटल)।

6. अभ्यास प्रश्न (MCQs)

- **भारतीय संदर्भ में शासन क्या है?**

- ग्रामीण विरोध
- राज्य की जवाबदेही
- डिजिटल अलगाव
- जनजातीय स्वायत्तता

उत्तर : b) राज्य की जवाबदेही

स्पष्टीकरण : उदाहरण, आधार, आरटीआई, 1 मिलियन आवेदन।

- **भारत में आयुष्मान भारत का लक्ष्य है :**

- ग्रामीण प्रवास
- सार्वभौमिक स्वास्थ्य कवरेज
- डिजिटल एन्क्लेव
- जातिगत सद्व्याव

उत्तर : b) सार्वभौमिक स्वास्थ्य कवरेज

स्पष्टीकरण : 500 मिलियन कवर, ₹5 लाख/वर्ष।

- **भारत में ई-गवर्नेंस में शामिल हैं:**

- शहरी दंगे
- आधार, ई-एनएएम
- आदिवासी संघर्ष
- ग्रामीण अशांति

उत्तर : b) आधार, ई-एनएएम

स्पष्टीकरण : 1.3 बिलियन उपयोगकर्ता, 20% किसान।

- **सेन का विकास सिद्धांत जोर देता है:**

- आर्थिक गिरावट
- क्षमता विस्तार
- डिजिटल बहिष्कार
- जातिगत हिंसा

उत्तर : b) क्षमता विस्तार

स्पष्टीकरण : उदाहरण, 74% साक्षरता, 70 वर्ष की जीवन प्रत्याशा।

- किसान के स्वास्थ्य असमानता सिद्धांत पर प्रकाश डाला गया:

- डिजिटल समानता
- संरचनात्मक हिंसा
- शहरी धन
- राजनीतिक सुधार

उत्तर : b) संरचनात्मक हिंसा

स्पष्टीकरण : उदाहरण के लिए, 30% दलितों का बीमा नहीं है।

- स्वच्छ भारत स्वास्थ्य नीति किस पर केंद्रित है:

- शहरी नौकरियाँ
- स्वच्छता, शौचालय
- डिजिटल सक्रियता
- जाति एकीकरण

उत्तर : b) स्वच्छता, शौचालय

स्पष्टीकरण : 100 मिलियन शौचालय बनाए गए।

- भारत में स्वास्थ्य असमानताओं में शामिल हैं:

- सार्वभौमिक पहुंच
- 30% बीमा रहित ग्रामीण
- डिजिटल समानता
- शहरी सञ्चार

उत्तर : b) 30% बीमा रहित ग्रामीण

स्पष्टीकरण : उदाहरण के लिए, 50% एसटी के पास अस्पताल तक पहुंच नहीं है।

- भारत में जननी सुरक्षा का समर्थन करता है:

- मानसिक स्वास्थ्य
- मातृ-शिशु स्वास्थ्य
- डिजिटल स्वास्थ्य
- शहरी मलिन बस्तियाँ

उत्तर : b) मातृ-शिशु स्वास्थ्य

स्पष्टीकरण : 10 मिलियन लाभार्थी, 150/100,000 मृत्यु दर।

- कारपेंटर का स्वास्थ्य नीति सिद्धांत जोर देता है:

- डिजिटल नवाचार
- सामाजिक निर्धारक
- ग्रामीण प्रवास
- शहरी धन

उत्तर : b) सामाजिक निर्धारक

स्पष्टीकरण : उदाहरण, 50% ग्रामीण कृपोषण।

- भारतीय स्वास्थ्य नीति में डिजिटल विभाजन की सीमा:

- शहरी नौकरियाँ
- ई-संजीवनी पहुंच (20% ग्रामीण)
- जाति एकीकरण
- राजनीतिक सुधार

उत्तर : b) ई-संजीवनी पहुंच (20% ग्रामीण)

स्पष्टीकरण : 10 मिलियन टेलीकंसल्टेशन, ग्रामीण बहिष्करण।

7. हालिया घटनाक्रम

- **ई-गवर्नेंस (2025)** : आधार (1.3 बिलियन उपयोगकर्ता), ई-नाम (20% किसान), 80% यूपीआई लेनदेन, लेकिन 20% ग्रामीण इंटरनेट में दलित, अनुसूचित जनजाति शामिल नहीं हैं (इकाई 4, भाग 4.4)।
- **स्वास्थ्य नीति** : आयुष्मान भारत (500 मिलियन कवर), 90% टीकाकरण, ई-संजीवनी (10 मिलियन परामर्श), लेकिन 30% बीमा रहित, 50% ग्रामीण कृपोषण।
- **विकास** : 7% जीडीपी वृद्धि, एचडीआई 0.64, 74% साक्षरता, लेकिन 30% गरीबी, 70% दलित कम वेतन (इकाई 4, भाग 4.1)।

- **भारतीय समाजशास्त्र :** ई-गवर्नेंस (आधार), स्वास्थ्य असमानताएं (30% बीमा रहित), और जाति-जनजाति अंतर (50% एसटी गरीबी, भाग 1) हावी हैं, एनईपी 2020 कौशल को संबोधित करता है (भाग 3)।
- **वैश्विक रुद्धान :** वैश्विक स्वास्थ्य लक्ष्य (एसडीजी, यूएचसी), डल्यूएचओ समर्थन (₹10 बिलियन), और जलवायु जोखिम (सूखा, इकाई 4, भाग 4.2) भारत की स्वास्थ्य नीति को प्रभावित करते हैं।

3: सार्वजनिक नीति: शिक्षा और आजीविका, राजनीतिक संस्कृति

1. सार्वजनिक नीति: शिक्षा

1.1 परिभाषा और महत्व

लोक नीति: शिक्षा का तात्पर्य कार्यक्रमों, वित्त पोषण और बुनियादी ढाँचे के माध्यम से शिक्षा तक समान पहुँच प्रदान करने के लिए राज्य के हस्तक्षेप से है, जिससे मानव पूँजी और सामाजिक गतिशीलता में वृद्धि होती है। समाजशास्त्र में, यह शैक्षिक असमानताओं, राज्य की ज़िम्मेदारी और सामाजिक समता का विश्लेषण करता है।

- **मुख्य विचार :** शिक्षा नीति समानता को बढ़ावा देती है, असमानताओं को कम करती है।
- **प्रमुख विचारक :**
 - **पियरे बैर्डिंग्यू :** शिक्षा सांस्कृतिक पूँजी के रूप में, वर्ग का पुनरुत्पादन।
 - **अमर्त्य सेन :** शिक्षा क्षमता विस्तार और स्वतंत्रता के रूप में।
 - **पाउलो फ्रेरे :** सशक्तिकरण के रूप में शिक्षा, आलोचनात्मक चेतना।
- **उद्देश्य :**
 - शैक्षिक परिणामों की व्याख्या करें (उदाहरणार्थ, 74% साक्षरता)।
 - असमानताओं का विश्लेषण करता है (जैसे, 40% ग्रामीण साक्षरता अंतराल)।
 - नीति को प्रासंगिक बनाता है (उदाहरण के लिए, एनईपी 2020)।

विस्तृत व्याख्या :

बैर्डिंग्यू का सांस्कृतिक पूँजी सिद्धांत शिक्षा को एक सुदृढ़ वर्ग के रूप में देखता है, जहाँ 70% उच्च-जाति के सातक नौकरियों पर हावी हैं (इकाई 4, भाग 4.1), जबकि दलित (50% साक्षरता) बहिष्कार का सामना करते हैं (भाग 6)। सेन का क्षमता वृष्टिकोण शिक्षा को स्वतंत्रता बढ़ाने वाला मानता है, जहाँ भारत की 74% साक्षरता (2025) और 80% स्कूल नामांकन प्रगति को दर्शाते हैं (इकाई 2), हालाँकि 40% ग्रामीण साक्षरता शहरी साक्षरता से पीछे है (80%, इकाई 4, भाग 4.2)। फ्रेर का सशक्तिकरण ढाँचा दलित सक्रियता में शिक्षा की भूमिका पर ज़ोर देता है (उदाहरण के लिए, भीम आर्मी, इकाई 3, भाग 4.3), और आलोचनात्मक चेतना को बढ़ावा देता है। भारत की शिक्षा नीति, NEP 2020 के माध्यम से, 2030 तक 100% नामांकन का लक्ष्य रखती है, जिसे 10 लाख शिक्षकों और 150,000 स्कूलों द्वारा समर्थित किया जाएगा। ग्रामीण-शहरी अंतर (60% ग्रामीण स्कूलों में कंप्यूटर का अभाव), जाति (50% दलित स्कूल छोड़ देते हैं), और लैंगिक असमानताएँ (65% महिला साक्षरता) अभी भी मौजूद हैं। डिजिटल प्लेटफॉर्म (स्वयं, 1 करोड़ उपयोगकर्ता) और शहरी विकास (30% शहरी साक्षरता में अग्रणी, इकाई 4, भाग 4.4) पहुँच को आकार देते हैं, लेकिन डिजिटल विभाजन (20% ग्रामीण इंटरनेट, इकाई 4, भाग 4.4) और भ्रष्टाचार (5% शिक्षा निधि का दुरुपयोग) प्रभाव को सीमित करते हैं, जिससे शिक्षा नीति यूजीसी नेट जेआरएफ के लिए महत्वपूर्ण हो जाती है।

1.2 सार्वजनिक नीति की विशेषताएँ: शिक्षा

- **समान पहुँच :** सार्वभौमिक शिक्षा (जैसे, आरटीई)।
- **कौशल विकास :** व्यावसायिक प्रशिक्षण (जैसे, एनईपी 2020)।
- **बुनियादी ढाँचा :** स्कूल, शिक्षक (1 मिलियन शिक्षक)।
- **असमानताएँ :** जाति, लिंग, ग्रामीण अंतराल (जैसे, 50% दलितों का स्कूल छोड़ देना)।
- **डिजिटल शिक्षा :** ऑनलाइन प्लेटफॉर्म (जैसे, स्वयं)।

स्मृति सहायक : ईएसआईडीडी (समानता, कौशल, बुनियादी ढाँचा, असमानताएँ, डिजिटल)।

विस्तृत विवरण :

- **समान पहुँच :** आरटीई (2009) 6-14 वर्ष के बच्चों के लिए मुफ्त शिक्षा सुनिश्चित करता है, 80% नामांकन, लेकिन 20% स्कूल से बाहर के बच्चे।
- **कौशल विकास :** एनईपी 2020 व्यावसायिक प्रशिक्षण शुरू करता है, जिससे प्रतिवर्ष 10,000 नौकरियां पैदा होंगी (यूनिट 2)।
- **बुनियादी ढाँचा :** 150,000 स्कूल, 1 मिलियन शिक्षक, लेकिन 60% ग्रामीण स्कूलों में कंप्यूटर का अभाव है।
- **असमानताएँ :** 50% दलित स्कूल छोड़ देते हैं, 65% महिला साक्षरता, 40% ग्रामीण साक्षरता (इकाई 4, भाग 4.1)।
- **डिजिटल शिक्षा :** स्वयं (10 मिलियन उपयोगकर्ता), लेकिन 20% ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट का अभाव (इकाई 4, भाग 4.4)।

1.3 शिक्षा नीतियों के प्रकार

- **सार्वभौमिक शिक्षा :** निःशुल्क, अनिवार्य स्कूली शिक्षा (जैसे, आर.टी.ई.)।
- **उच्च शिक्षा :** विश्वविद्यालय, अनुसंधान (जैसे, यूजीसी)।

- **व्यावसायिक शिक्षा** : कौशल प्रशिक्षण (जैसे, आईटीआई)।
- **समावेशी शिक्षा** : हाशिए पर स्थित समूह (जैसे, ईडब्ल्यूएस कोटा)।
- **डिजिटल शिक्षा** : ऑनलाइन शिक्षा (जैसे, दीक्षा)।

स्मृति सहायक : UHVID .* * (सार्वभौमिक, उच्चतर, व्यावसायिक, समावेशी, डिजिटल)।

विस्तृत विवरण :

- **सार्वभौमिक शिक्षा** : आरटीई 80% नामांकन सुनिश्चित करता है, 150,000 स्कूल 6-14 वर्ष के बच्चों को सहायता प्रदान करते हैं।
- **उच्च शिक्षा** : यूजीसी 50,000 कॉलेजों को वित्तपोषित करता है, विश्वविद्यालयों में 10% एससी/एसटी (यूनिट 2)।
- **व्यावसायिक शिक्षा** : 10,000 आईटीआई प्रतिवर्ष 1 मिलियन को प्रशिक्षित करते हैं, एनईपी 2020 कौशल को बढ़ावा देता है।
- **समावेशी शिक्षा** : 10% ईडब्ल्यूएस कोटा, 7.5% एसटी आरक्षण, लेकिन 50% दलित ड्रॉपआउट (यूनिट 4, भाग 4.1)।
- **डिजिटल शिक्षा** : दीक्षा (5 मिलियन उपयोगकर्ता), स्वयं (10 मिलियन), लेकिन 20% ग्रामीण बहिष्कृत (इकाई 4, भाग 4.4)।

1.4 सार्वजनिक नीति: भारतीय संदर्भ में शिक्षा

- **पैमाना** : 1.4 बिलियन जनसंख्या, 74% साक्षरता, 80% नामांकन।
- **उदाहरण** : एनईपी 2020, 2030 तक 100% नामांकन लक्ष्य।
- **जनसांख्यिकी** : 20% दलित, 8.6% अनुसूचित जनजाति, 30% शहरी (इकाई 4, भाग 4.4)।
- **उपलब्धियां** : 150,000 स्कूल, 1 मिलियन शिक्षक, 10 मिलियन SWAYAM उपयोगकर्ता।
- **नीतियां** : आरटीई (2009), एनईपी 2020, सर्व शिक्षा अभियान (एसएसए)।
- **चुनौतियाँ** : 50% दलित स्कूल छोड़ देते हैं, 60% ग्रामीण स्कूलों में कंप्यूटर का अभाव है, 20% ग्रामीण डिजिटल विभाजन हैं।

विस्तृत भारतीय उदाहरण :

बिहार में, शिक्षा नीति 120 मिलियन नागरिकों को संबोधित करती है। एनईपी 2020 का लक्ष्य 2030 तक 100% नामांकन है, सेन के क्षमता दृष्टिकोण के अनुसार, एसएसए 50,000 स्कूलों में 80% नामांकन को बढ़ावा देगा, जिसमें 200,000 शिक्षक सहयोग करेंगे। आरटीई (2009) मुफ्त शिक्षा सुनिश्चित करता है, लेकिन 20% बच्चे (ज्यादातर दलित) स्कूल से बाहर हैं, जैसा कि बौद्धियू की सांस्कृतिक पूँजी आलोचना (इकाई 4, भाग 4.1) के अनुसार है। 1,000 आईटीआई के माध्यम से व्यावसायिक शिक्षा सालाना 100,000 को प्रशिक्षित करती है, जिससे 10,000 नौकरियां पैदा होती हैं, जैसा कि फ्रायर के सशक्तीकरण (इकाई 2) के अनुसार है। समावेशी शिक्षा 7.5% एसटी, 15% एससी कोटा प्रदान करती है स्वयं (2 मिलियन उपयोगकर्ता) और दीक्षा (1 मिलियन) के माध्यम से डिजिटल शिक्षा शहरी क्षेत्रों (30% जनसंख्या, इकाई 4, भाग 4.4) के लिए सहायक है, लेकिन 20% ग्रामीण इंटरनेट पहुँच (इकाई 4, भाग 4.4) अनुसूचित जनजातियों (40% साक्षरता, भाग 1) को इससे बाहर रखती है। भ्रष्टाचार (5% सर्व शिक्षा अभियान निधि का दुरुपयोग) और जातिगत हिंसा (500 मामले/वर्ष, इकाई 4, भाग 4.3) प्रगति में बाधा डालते हैं, और #EducationForAll (200,000 द्वीप) सुधार की माँग करते हुए भारत के विकास में शिक्षा नीति की भूमिका पर प्रकाश डालते हैं।

1.5 सैद्धांतिक दृष्टिकोण

- **सांस्कृतिक पूँजी (बौद्धियू)** : शिक्षा वर्ग को पुनरुत्पादित करती है (उदाहरण के लिए, 70% उच्च जाति के स्नातक)।
- **क्षमता दृष्टिकोण (सेन)** : शिक्षा स्वतंत्रता के रूप में (उदाहरणार्थ, 74% साक्षरता)।
- **आलोचनात्मक शिक्षाशास्त्र (फ्रेरे)** : सशक्तिकरण, चेतना (जैसे, दलित सक्रियता)।
- **संघर्ष सिद्धांत (मार्क्स)** : शिक्षा अभिजात वर्ग की सेवा करती है (उदाहरण के लिए, शहरी पूर्वग्रह)।
- **भारतीय उदाहरण** : बौद्धियू की पूँजी बनाम फ्रेरे का सशक्तिकरण।

विस्तृत विश्लेषण :

- **सांस्कृतिक पूँजी** : बौद्धियू का मानना है कि 70% उच्च जाति के स्नातक नौकरियों पर हावी हैं, जिसमें 50% दलित शामिल नहीं हैं (इकाई 4, भाग 4.1)।
- **क्षमता दृष्टिकोण** : सेन 74% साक्षरता को स्वतंत्रता का विस्तार मानते हैं, लेकिन 40% ग्रामीण अंतराल लाभ को सीमित करते हैं (इकाई 2)।
- **आलोचनात्मक शिक्षाशास्त्र** : फ्रेरे दलित सक्रियता (भीम आर्मी, इकाई 3, भाग 4.3) को शिक्षा द्वारा सशक्त मानते हैं।
- **संघर्ष सिद्धांत** : मार्क्स शहरी पूर्वग्रह (80% साक्षरता) को अभिजात वर्ग के पक्ष में, ग्रामीण गरीबों (40%) को हाशिए पर रखने वाला मानते हैं।

1.6 ताकत और सीमाएँ

- **ताकत** :
 - साक्षरता में वृद्धि (74%)。
 - गतिशीलता को बढ़ावा देता है (कॉलेजों में 10% एससी/एसटी)।
- **सीमाएँ** :
 - असमानताएँ (50% दलित स्कूल छोड़ देते हैं)।
 - भ्रष्टाचार (5% निधि का दुरुपयोग)।

आलोचनाएँ :

- बौर्डिंग की पूँजी नीतिगत सुधारों (जैसे, एनईपी 2020) की अनदेखी करती है।
- फ्रेरे का सशक्तिकरण डिजिटल विभाजन को कम करके आंकता है (20% ग्रामीण, इकाई 4, भाग 4.4)।
- ग्रामीण-शहरी अंतराल शिक्षा विश्लेषण को चुनौती देते हैं (इकाई 4, भाग 4.2)।

2. सार्वजनिक नीति: आजीविका

2.1 परिभाषा और महत्व

लोक नीति: आजीविका से तात्पर्य रोजगार, कौशल विकास और कल्याणकारी योजनाओं के माध्यम से आर्थिक सुरक्षा सुनिश्चित करने, गरीबी और असमानता को कम करने के लिए राज्य के हस्तक्षेप से है। समाजशास्त्र में, यह आर्थिक समावेशन, राज्य के उत्तरदायित्व और सामाजिक समता का विश्लेषण करता है।

- मुख्य विचार :** आजीविका नीतियां गरीबी कम करती हैं, सुरक्षा बढ़ाती हैं।

प्रमुख विचारक :

- अमर्त्य सेन :** आजीविका एक क्षमता, आर्थिक स्वतंत्रता के रूप में।
- ज्यां ड्रेज :** सुरक्षा जाल के रूप में कल्याणकारी योजनाएं (उदाहरण के लिए, मनरेगा)।
- कार्ल पोलानी :** आजीविका में बाजार-राज्य संतुलन (जैसे, गिग अर्थव्यवस्था)।
- उद्देश्य :**
- आर्थिक परिणामों की व्याख्या करें (उदाहरण के लिए, 40% ग्रामीण कार्यबल)।
- असमानताओं का विश्लेषण (जैसे, 70% दलित कम वेतन पर)।
- नीति को प्रासंगिक बनाता है (जैसे, मनरेगा)।

विस्तृत व्याख्या :

सेन का क्षमता वृष्टिकोण आजीविका को सक्षम करने वाली स्वतंत्रता के रूप में देखता है, जिसमें मनरेगा (50 मिलियन व्यक्ति-दिन, इकाई 4, भाग 4.2) 40% ग्रामीण कार्यबल को ₹100/दिन प्रदान करता है, हालाँकि 30% गरीबी रेखा से नीचे रहते हैं (इकाई 2)। ड्रेज का कल्याणकारी वृष्टिकोण सुरक्षा जाल पर जोर देता है, जिसमें पीएम-किसान (100 मिलियन किसान, ₹6,000/वर्ष) कृषि का समर्थन करता है, लेकिन 60% भुगतान में देरी होती है (भाग 1)। पोलानी का बाजार-राज्य संतुलन गिग इकॉनमी शोषण (10 मिलियन श्रमिक, ₹100/दिन) की आलोचना करता है, जिसमें पीएम-स्वनिधि (1 मिलियन स्ट्रीट वेंडर) जैसी नीतियां समावेशन का लक्ष्य रखती हैं। भारत की आजीविका नीतियां 1.4 बिलियन को लक्षित करती हैं, ग्रामीण-शहरी प्रवास (1 करोड़ प्रतिवर्ष, इकाई 4, भाग 4.2) और जाति (70% दलित कम वेतन वाले, इकाई 4, भाग 4.1) परिणामों को आकार देते हैं। डिजिटल प्लेटफॉर्म (ई-नाम, 20% किसान, भाग 1) और शहरी गिग अर्थव्यवस्था (जैसे, स्विगी, 10 लाख कर्मचारी) पहुँच बढ़ाते हैं, लेकिन डिजिटल विभाजन (20% ग्रामीण इंटरनेट, इकाई 4, भाग 4.4) और भ्रष्टाचार (5% आजीविका निधि का दुरुपयोग) प्रभाव को सीमित करते हैं, जिससे यूजीसी नेट जेआरएफ के लिए आजीविका नीति महत्वपूर्ण हो जाती है।

2.2 सार्वजनिक नीति की विशेषताएँ: आजीविका

- रोजगार सृजन :** रोजगार सृजन (जैसे, मनरेगा)।
- कौशल विकास :** प्रशिक्षण कार्यक्रम (जैसे, पीएम-किसान)।
- कल्याण सहायता :** नकद हस्तांतरण (जैसे, पीएम-किसान)।
- असमानताएँ :** जाति, लिंग अंतर (उदाहरणार्थ, 70% दलित कम वेतन पर)।
- डिजिटल पहुँच :** ई-मार्केट, गिग कार्य (जैसे, ई-एनएएम)।

स्मृति सहायक : ईएसडब्ल्यूडीडी (रोजगार, कौशल, कल्याण, असमानताएं, डिजिटल)।

विस्तृत विवरण :

- रोजगार सृजन :** मनरेगा 50 मिलियन व्यक्ति-दिवस, 100 रुपये प्रतिदिन, 40% ग्रामीण कार्यबल प्रदान करता है।
- कौशल विकास :** पीएमकेवीवाई 10 मिलियन लोगों को प्रशिक्षित करता है, जिससे प्रतिवर्ष 1 मिलियन नौकरियां पैदा होती हैं।
- कल्याण सहायता :** पीएम-किसान योजना के तहत 100 मिलियन किसानों को प्रति वर्ष ₹6,000 हस्तांतरित किए जाते हैं, लेकिन 60% किसानों को देरी होती है (भाग 1)।
- असमानताएं :** 70% दलित कम वेतन पर काम करते हैं, 25% महिला कार्यबल (इकाई 4, भाग 4.3)।
- डिजिटल पहुँच :** ई-एनएएम (20% किसान), स्विगी (1 मिलियन श्रमिक), लेकिन 20% ग्रामीण इससे बाहर (यूनिट 4, भाग 4.4)।

2.3 आजीविका नीतियों के प्रकार

- ग्रामीण रोजगार :** कृषि, मजदूरी कार्यक्रम (जैसे, मनरेगा)।
- शहरी रोजगार :** गिग, अनौपचारिक नौकरियां (जैसे, पीएम-स्वनिधि)।
- कौशल विकास :** व्यावसायिक प्रशिक्षण (जैसे, पीएमकेवीवाई)।
- कल्याणकारी योजनाएँ :** नकद, सब्सिडी (जैसे, पीएम-किसान)।